पी आर एल के मेरे अनुभव

वी. रंगनाथन

लेखकः वी. रंगनाथन
अनुवादः राधे श्याम गुप्ता
डिजाइन एवं विन्यासः दिनेश मेहता
सहयोगः रुमकी दत्ता, आशीष सवडकर
प्रकाशकः भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद
मुद्रितः

आमुख

भाषा किसी भी मानव समाज के लिए अत्यंत स्वाभाविक और सहज व्यवस्था है। जैसे देह और प्राण और अग्नि और प्रकाश का अन्योन्याश्रित संबंध है वैसे ही भाषा और समाज का संबंध अटूट और अनिवार्य है। भाषाविहीन समाज और समाजविहीन भाषा की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कोई भी समाज भाषा के माध्यम से ही बनता है, बढ़ता है और विकसित होता है।

इसी विचारधारा का पोषण करते हुए साहित्य संरचना की एक अहम भूमिका किसी भी संस्था में एक ऊर्जास्रोत की तरह होती है। विगत वर्षों में तकनीकी, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक साहित्य का हिंदी में लेखन और प्रकाशन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इसी दिशा में संस्था के किसी सदस्य द्वारा उनके विचारों को लेखनीबद्ध करना और उन्हें सभी सदस्यों के साथ साझा करना एक सराहनीय कदम है।

श्री वी. रंगनाथन से पी.आर.एल. के अधिकांश स्टॉफ सदस्य परिचित हैं। उन्होंने इस पुस्तक के माध्यम से कार्यालय में अपने अनुभव तथा अपने निजी जीवन पर इसके प्रभाव का बहुत सुंदर चित्रण किया है।

ऐसे कई सदस्य हैं जिनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों या आत्मकथा से हम अपने कार्यालय से अवगत तथा लाभान्वित भी हो सकते हैं। मेरा ऐसा मानना है कि इस तरह के प्रकाशनों को हिन्दी में भी प्रकाशित किया जाना चाहिए। ऐसे ही एक प्रयास को सहज सरल हिंदी में आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पुस्तक मूल रूप से अंग्रेजी में लिखी गई है और इसका अनुवाद पी.आर.एल. में ही किया गया है ताकि विभाग

की राजभाषा नीति को बढ़ावा मिले। अनुवाद में लेखक के मूल भावनाओं तथा पाठकों के प्रति इसे सरल रूप में पहुंचाने का विशेष ध्यान रखा गया है।

आशा है कि अभिव्यक्ति की इस सरलतम स्रोत को आगे बढ़ाने में भविष्य में भी पाठकों का साथ मिलता रहेगा और अन्य सदस्य भी इस तरह की पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित होंगे।

अनिल भारद्वाज
निदेशक

विषय सूची

प्रस्तावना	1
कुछ शब्द..	4
आरंभिक वर्ष	8
पीआरएल में मेरा पुनः प्रवेश	16
प्रो. विक्रम साराभाई - एक महान व्यक्तित्व के धनी!	27
पीआरएल में मित्र और सहकर्मी	31
पासपोर्ट और विदेशी यात्रा	45
प्रो. देवेंद्र लाल, एफ.आर.एस	53
पीआरएल में विज्ञान	62
प्रशासन में घटनाएं	68
खेल और पुरस्कार	81
हिंदी समारोह	90
पीआरएल में सांस्कृतिक कार्यक्रम	93
परिवार	95
गुजरात और गुजराती	99
आभार	104

प्रस्तावना

जैसे-जैसे जीवन आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे समय बीतता रहता है, घटनाएं घटती रहती हैं और अनुभव हासिल होते जाते हैं। सब कुछ बेतरतीब ढंग से चलता रहता है; जिसके साथ होते हैं आनन्द के क्षण और निराशा की अवधि, सभी समान मात्रा में रहते हैं। नौकरी में हमेशा कुछ काम करना होता है, लक्ष्य हासिल करना होता है, आपात स्थितियों से निपटना होता है, हमें चाहे वह कितना भी प्रेरणादायक हो या न हो, निरर्थक हो या सार्थक, प्रासंगिक हो या अप्रासंगिक। यात्रा के इस चरण के दौरान, हम अति आवश्यक काम करते हैं और महत्वपूर्ण चीजें भविष्य के लिए छोड़ देते हैं। और, इनका सामना करते समय, हमें पता ही नहीं चलता कि समय की गति कितनी तेज होती है और हमें पिछले वर्षों के युवाकाल से हाल की परिपक्वता और वरिष्ठ नागरिक की वर्तमान स्थिति तक पहुंचा देती है। इस भागदौड़ में, शायद ही हमें चिंतन और मनन करने के लिए समय मिल पाता है।

रंगनाथन के द्वारा यह “वृत्तांत” अपने पीआरएल के दिनों को फिर से जीने और मनन करने का एक प्रयास है। उन्होंने जो लिखा और जिस तरीके से लिखा, उसने मेरे मन को छू लिया है। उनके व्यक्तित्व - एक सकारात्मक दृष्टिकोण, हंसमुख और खुशी, जीवन के लिए उत्साह की शैली में लिखे पीआरएल में उनका यह यात्रा वृत्तांत मुझे पीआरएल, इसकी कार्य संस्कृति, एक समुदाय के लोकाचार, इसके भोलेपन, अपनी सादगी

और परिवार के अहसास के भूतकाल में ले गया। इसने मुझे व्यक्तिगत संबंध, तालमेल और एकजुटता के दिनों की याद ताजा कर दी जो तब अस्तित्व में थे। पहले हम अपने सहयोगियों से मिलते रहते थे, और अब तभी मिलते हैं जब इंटरनेट काम नहीं कर रहा होता है। तब हमें उनमें अचानक अच्छे लोग दिखाई देते हैं। रंगा ऐसे अच्छे लोगों की संगत के अपने दिनों को विषाद और आदर के साथ याद करते हैं। उनके बारे में सोचना भी ताजगी देता है!

कुछ समय पहले जब रंगा ने मुझे अपने आलेख की एक प्रति पढ़ने और संपादित करने के लिए दी थी, तो मुझे लगा था कि मुझे इसके लिए काफी समय देना होगा (जैसा मैं अक्सर यहां और अन्य जगहों पर सहयोगियों की वैज्ञानिक पांडुलिपियों के साथ करता हूं)। इसलिए मैं इसको टालता रहा और एक शाम मैंने इसे शुरू किया। लेकिन जब मैंने इसे शुरू किया, तो मैं इसे लगातार पढ़ता रहा और मुझे समय का ध्यान ही नहीं रहा। यह इतनी अच्छी तरह से लिखा गया था कि मुझे एक भी शब्द को संपादित नहीं करना पड़ा और उनकी खूबसूरत व्यक्तिगत शैली के कारण, मुझे इसे पढ़ना बहुत अच्छा लगा। मैं तब और अधिक भावुक हो गया जब अपने सभी सहयोगियों के बीच उन्होंने मुझे प्रस्तावना लिखने के लिए कहकर आश्चर्यचकित कर दिया। उनके मेरे प्रति इस विश्वास को मैं जीवन भर याद करता रहूंगा। मेरे लिए, यह अपने सहयोगी को सम्मान देने का अवसर था, जो मेरे साथ परिपक्व हुए और मुझे 37 साल के सुखद और तत्पर सौहार्दपूर्ण क्षण दिये। मुझे याद आया जब हम एक साथ सिगरेट पीते थे और मुझे उनकी अच्छी सिगरेट की कमजोरी अभी भी याद है। वे उन कुछ 'बुद्धिमान' लोगों में थे, जो सेल फोन नामक वस्तु से परेशान नहीं होना चाहते थे, भले ही वह हमारे लिए कितना भी निराशाजनक था!

पीआरएल में, जैसा हर जगह होता है, सेवा विस्तार की कुछ छिटपुट घटनाओं को छोड़कर, जन्म तिथि से ही सेवानिवृत्ति की तारीख तय की जाती है। ऐसी निश्चित चीज के लिए, हम अक्सर पाते हैं कि हम इस स्थिति के लिए तैयार नहीं हैं। रंगा ने दिखाया कि वे इसके लिए तैयार हैं और यहां तक कि नई चीजें करने के लिए भी उत्सुक हैं। वे "जीवन सेवानिवृत्ति से शुरू होता है" के प्रतीक हैं, लेकिन मैं उन्हें चेतावनी देते हुए कहता हूं कि सेवानिवृत्ति के साथ परेशानी यह है कि आपको एक दिन की भी छुट्टी नहीं मिलती! मुझे यकीन है कि वे अपनी सेवानिवृत्ति के बारे में उसी तरह से सोच रहे हैं जैसा किसी ने बहुत सुंदर ढंग से कहा था, "और सेवानिवृत्ति मेरे लिए सौंदर्य की खोज है। मेरे पास मेरे बच्चों के बच्चों, मेरी पत्नी, बाहर लगे पेड़ और अपने खुद के सामने के दरवाजे की सुंदरता को निहारने के लिए पहले कभी समय नहीं था।"

मैं रंगनाथन को एक स्वस्थ कार्यकर्ता, एक अच्छे सहयोगी और जो कुछ भी हम चाहते थे, उसमें हमारी सहायता करने के लिए धन्यवाद देता हूं। मैं इस मौके पर रंगा और उनके परिवार को शुभकामना देता हूं, तेंदुलकर की शैली में अपनी पहली सेन्चुरी पूरा करने के बाद, नई अद्भुत नई पारी के लिए गार्ड लेते हुए, और उनके अच्छे स्वास्थ्य, व्यक्तिगत शांति और सुखी जीवन की कामना करता हूं। तथास्तु!

ए.के. सिंघवी

प्रोफेसर ए.के. सिंघवी एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक, जे.सी. बोस नेशनल फेलो, अध्यक्ष, गुजरात साइंस अकादमी, और एफएनए, एफएएससी, एफ एनएएससी, एफटीडब्ल्यूएएस, एफजीएस (लंदन) हैं।

कुछ शब्द..

ये पीआरएल में कुछ सहयोगियों, दोस्तों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मेरे व्यक्तिगत अनुभव हैं; मैंने उन्हें अपने कुछ विचारों से प्रभावित किया है। ये भावनाएं और विचार हर किसी के लिए या कई अन्य लोगों के लिए एक से नहीं हो सकते। मेरा इरादा पीआरएल में मेरे सहयोगियों और वरिष्ठ लोगों के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करना है, जो ज्यादातर आभारोक्तियां हैं; किसी को भी दूर-दूर तक चोट पहुँचाना नहीं है।

मेरे लिखने के लिए पहले प्रयास को थोड़ा अधिक दिलचस्प बनाने के लिए मैंने बीच-बीच में कुछ दिलचस्प उद्धरण सम्मिलित किए हैं। पढ़ें और लुत्फ उठाएं!

वी. रंगनाथन

“हवाई जहाज की तरह जो भी हवा की तुलना में भारी है, वह उड़ नहीं सकता - कोशिश करना पूरी तरह से पागलपन है” - लॉर्ड केल्विन, रॉयल साइंस सोसाइटी, लंदन, 1895

मैंने नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर सुबह अपनी पत्नी से कहा, “क्या कॉफी तैयार है?” मुझे उत्तर मिला कि “मैं आ रही हूं, कृपया प्रतीक्षा करें”। मैंने कुछ बड़बड़ाहट भी सुनी, लेकिन मैंने इसे नजरअंदाज कर दिया। मेरे नियमित योगासन अभ्यास के बाद और अखबार पढ़ने के बाद, मैं बाथरूम में गया। मेरी मां ने कहा, “मैं पहले स्नान करूंगी, फिर तुम करना।” अजीब बात थी, लेकिन मैं मान गया। स्नान और तैयार होने के बाद, मैं खाने की मेज पर नाश्ते के लिए आ गया, जो असामान्य रूप से, वहां नहीं था। “नाश्ता तैयार क्यों नहीं है?” “जल्दी क्या है, थोड़ी देर प्रतीक्षा करें, मेरे पास केवल दो हाथ हैं” मेरी पत्नी ने उत्तर दिया। फिर से अजीब लगा, लेकिन मैं चुप रहा।

नाश्ते के बाद, मैंने कार्यालय जाने की तैयारी शुरू कर दी, तब मेरी पत्नी ने पूछा, “यह क्या है, आप कहां जा रहे हैं?” “क्यों, अपने कार्यालय में रोजाना की तरह” मैंने जवाब दिया। पत्नी ने कहा, “क्या आपको याद नहीं है कि कल ही आप

अपने कार्यालय से सेवानिवृत्त हुए हैं”? “ओह, मैं पूरी तरह से भूल गया था” मैंने उत्तर दिया और अपने जूते निकालने के लिए कुर्सी पर बैठ गया। “अपना समय काटने के लिए, आप इन सब्जियों को साफ कीजिए और काट दीजिए” मेरी पत्नी ने कहा और विचारशील होने की कोशिश की।

“देखिए, पिताजी, आप आज से स्वतंत्र हैं, है ना?” मेरी बेटी ने मुझसे कहा। मुझे जल्दी ही पता चल गया कि उसका यह कहना सामान्य नहीं था। “क्या आप मेरी इस ड्रेस को प्रेस कर देंगे? मुझे अपने कार्यालय के लिए देर हो रही है।” इस समय तक मैं अपनी नींद से जाग गया था। ओह, ये सब एक सपना था - लेकिन कौन जानता है, वे आने वाले दिनों में सच हो सकते हैं।

मैं 31 अक्टूबर, 2014 को पीआरएल से रिटायर हो रहा हूं। मैं इस निबंध को सेवानिवृत्ति पर एक दिलचस्प उद्धरण के साथ शुरू करना चाहता हूं जिसे मैंने पढ़ा था। “जब कोई व्यक्ति रिटायर होता है, तो उसकी पत्नी को उसका पति दुगुनी मात्रा में मिलता है लेकिन आमदनी आधी हो जाती है!” सौभाग्य से, मुझे अपनी पेंशन मिलेगी। पीआरएल में मेरे कई दोस्तों के विपरीत, जिन्होंने दुर्भाग्य से कंट्रीब्युटरी प्रॉविडेंट फंड

का विकल्प चुना है और फिर बाद में इसका उन्हें बहुत दुख हुआ। जल्द ही मुझे पीआरएल से रिटायर कर दिया जाएगा। लेकिन अभी तक मैं थका नहीं हूं क्योंकि मुझे लगता है कि मैं एक नए उत्साही के उत्साह के साथ अपनी जिंदगी फिर से शुरू करूंगा ...

फ्रांसीसी सेना के रणनीतिकार, मार्शल फर्डिनेंड फ़ॉच ने कहा था: "हवाई जहाज सबसे अच्छे अमीर खूबसूरत खिलौने हैं। वे सैन्य उद्देश्यों के लिए कभी भी उपयोगी नहीं हो सकते"

आरंभिक वर्ष

मुझे आज भी ठीक से याद है उस दिन 29 अक्टूबर था (क्योंकि यह तारीख मेरी शादी की तारीख भी है) जब मैंने 1974 में पीआरएल में भर्ती होने के लिए टाइपिंग टेस्ट और फिर साक्षात्कार दिया था जहां से पीआरएल के साथ मेरा रिश्ता बना। न केवल मैं पीआरएल में शामिल हुआ, बल्कि बाद में पीआरएल भी मेरे जीवन से जुड़ गया। हालांकि विपरीत क्रम में! मुझे यकीन है कि आप विस्मित हो रहे होंगे कि रंगनाथन के साथ पीआरएल कैसे जुड़ा था? मैं समझाता हूं। जब मैंने शादी की, L मुझसे जुड़ी (ललिता, मेरी पत्नी), जब मैं पिता बना, मुझे R मिला (बेटा, ऋषिकुमार), उसके बाद P (बेटी प्रीति)।

मुझे पीआरएल के बारे में कुछ भी पता नहीं था, न केवल पीआरएल के बारे में बल्कि मुझे किसी के बारे में भी कुछ पता नहीं था। जिस राज्य में मैं पैदा हुआ था, उस राज्य में जहां परिस्थितियों ने मुझे ला खड़ा किया था, वहां के लोगों, संस्कृति, भाषा, भोजन - इन सभी और जो कुछ भी आप मुझसे पूछे, मुझे कुछ पता नहीं था।

जब मैं अहमदाबाद आया था, तो मैं घर पर केवल हाफ पैंट पहनता था और मैंने नौकरी ढूंढने के विशिष्ट उद्देश्य एक फुल पैंट (पतलून) सिलाई थी! मैं पीआरएल में पहली फुल पैंट पहनकर आया, जो वास्तव में टखने तक लंबी थी और मैं हवाई चप्पल पहने था जो हर कदम के साथ टप-टप की आवाज कर रही थी। मैं ऐसे राज्य में पला-बढ़ा था जो हिंदी के खिलाफ जोरदार आंदोलन करता रहा था, तो स्वाभाविक है कि मैं हमारी राज भाषा - हिन्दी नहीं जानता था। तो उस समय मैं यही कर सकता था कि मैं बोलचाल की हिंदी सीखना शुरू करूं; स्पष्ट रूप से गुजराती रंग के साथ।

हम चेन्नई, तत्कालीन मद्रास में, कुलनामों का इस्तेमाल नहीं करते हैं लेकिन विंध्य पर्वतमाला के उत्तर के लोगों के विपरीत हमारे पिता के नाम का उपयोग करते हैं। पीआरएल

और बैंक के लिए, मैं सिर्फ वी. रंगनाथन हूं जबकि मेरी पढ़ाई और पासपोर्ट के लिए मुझे अपने कुलनाम का उपयोग करना पड़ा। गुजरात के लिए नये नवागंतुक होने के कारण मुझे स्थानीय प्रथा के अनुसार अपना नाम इस्तेमाल करना पड़ा और मेरा नाम मेरे पासपोर्ट और स्नातक प्रमाणपत्र में आयंगर रंगनाथन वीरराघवन हो गया। जैसे, रोम में एक रोमन!

भारत में बहुत सारे राज्य हैं और विभिन्न राज्यों के लोगों के नाम लिखने के तरीके अलग-अलग हैं। अधिकांश केरलवासी अपने नामों में अपने घरों के नामों को जोड़ते हैं, तमिलनाडु में हम अपने पिता के नाम के पहले अक्षर को हमारे आद्यक्षर के रूप में इस्तेमाल करते हैं। फिर भी, कुछ लोग अपने नाम के साथ अपने गांव का नाम भी लगाते हैं। यहां गुजरात में, पहले कुलनाम, फिर अपना नाम उसके बाद पिता का नाम लिखा जाता है।

यद्यापि नाम कुछ भी नहीं है बल्कि एक शब्द है, लेकिन लोग आम तौर पर अपने नाम से प्यार करते हैं जैसे वे खुद को प्यार करते हैं। यहां तक कि 'कचराभाई' भी इसका अपवाद नहीं है। लेकिन कभी-कभी रंगानाथन, नारायणन और रामाचंद्रन जैसे नामों को रंगनाथन, नारायण और रामचंद्रन भी

बोला और लिखा जाता है। जब हम किसी व्यक्ति के नाम को विकृत करते हैं, तो हम जीवन की तरह उसकी कीमती चीज़ों पर हमला करते हैं! कभी-कभी ऐसे कुछ नामों की विकृति हास्यास्पद भी हो सकती हैं; देसाई को दोसाई में बदलना (तमिल में दोसाई डोसा है)। यद्यापि हमारे माता-पिता (या चाची, परिवार की परंपराओं के अनुसार) हमें हमारे नाम देते हैं, लेकिन कई बार, हमें हमारे प्रिय नामों से बुलाया जाता है, विशेष रूप से स्कूल और कॉलेज में, जो हमें नापसंद होता है।

प्रारंभ में, मुझे पीआरएल में कम्प्यूटर सोसाइटी ऑफ इंडिया, अहमदाबाद चैप्टर में काम करने के लिए चुना गया था। श्री अशोक गुप्ता मेरे बॉस थे, जो मेरे गुरु भी बन गए थे। वे एक मृदुभाषी सज्जन थे। जिन्होंने मुझे एक लड़के से एक व्यक्ति के रूप में ढाला। उन्होंने न केवल मुझे टाइपिंग का कार्य सौंपा, जिसके लिए मुझे काम पर रखा गया था, बल्कि मुझे धीरे-धीरे बाहर की दुनिया से परिचित भी करवाया, जिसमें लोगों से मिलना, उनके नाम दर्ज करना, फ़ॉर्म भरना, सोसाइटी के आगामी वार्षिक सम्मेलन के लिए पंजीकरण शुल्क लेना आदि शामिल था।

1974 में पीआरएल कंप्यूटर केंद्र देश के सबसे उन्नत

कंप्यूटरों में से एक था। इस केंद्र के मुख्य हॉल में बाईं ओर चौथी पीढ़ी का बहुत बड़ा आईबीएम कंप्यूटर था जो विशाल अखंड संरचना की तरह खड़ा था। कंप्यूटर केंद्र के पवित्र स्थान ने मुझे मक्का के 'काबा' की याद दिलायी। और कुछ 'पंच ऑपरेटर' (एक पदनाम जो उन्नत कंप्यूटरों के आगमन के साथ बाद में समाप्त हो गया) थे, जो हर समय मनीला कार्ड को तेजी से पंच करते रहते थे। कार्ड से काफी कचरा निकलता रहता था (पंच करने से निकली छोटी-छोटी टिकिया), जिन्हें कुछ कर्मचारी एकत्र करते थे जिनसे छोटे बच्चे खेलते थे।

पीआरएल में मेरे पहले दिन श्री पी. के. गोपी(अब सेवानिवृत्त) ने पीआरएल में मेरी मदद की, जैसे मुझे जनरल कैंटीन में ले जाना और खाने के लिए कूपन खरीदना। पीआरएल के कई हालिया नए सदस्य कैंटीन कूपन के बारे में नहीं जानते हैं क्योंकि अब सब कुछ कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है, खाने के कूपन को सीरियल नंबर के साथ छापना, उनका हिसाब रखना, नकद और उधार में बेचना, वितरण करना और कभी-कभी अनिवार्य रूप से उसमें नुकसान होना जैसी कठिन प्रक्रिया इतिहास हो गई हैं! सिर्फ पीआरएल के अपेक्षाकृत नए सदस्यों की जानकारी के लिए, 1976-77 के दौरान चाय केवल 10 पैसे, नाश्ता या आमलेट 25 पैसे और भोजन की एक

पूरी थाली (यहां तक कि एक गैर-शाकाहारी आइटम के साथ) 65 पैसे में मिलती थी। कई दिनों तक, मैंने पीआरएल और अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र (सैक) दोनों के कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को पीआरएल कैंटीन में रात का खाना खाने के लिए एक बड़ी कतार लगाते देखा है।

पीआरएल कैंटीन के बारे में कुछ वर्णन करना जरूरी है। जब हॉस्टल साइट पर छात्रों का मैस शुरू नहीं हुआ था, तब तक पीआरएल मुख्य कैंटीन में सभी शोधछात्रों के लिए भोजन मिलता था। सुबह और रात के दौरान कैंटीन की गतिविधियों के कारण, पूरे कैंपस को देर रात में भी सक्रियता के साथ प्रयोग किया जाता था क्योंकि कैंटीन रात के 12 बजे चाय के बाद ही बंद होती थी! हालांकि यह मुख्य रूप से वर्कशॉप स्टाफ (जो शिफ्ट में काम करते थे), और रात के दौरान शोध करने वाले वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए था, हालांकि कई स्टॉफ सदस्यों और यहां तक कि बाहरी लोग भी इसका लाभ लेते थे क्योंकि तब प्रवेश नियंत्रित करने के लिए सीआईएसएफ कर्मी नहीं थे। मैं कहूंगा कि पीआरएल की कैंटीन यहाँ अहमदाबाद में दूर-दूर तक अपने अभिनव व्यंजनों और सेवाओं के लिए जानी जाती थी!

ऊपर वर्णित पीआरएल कार्यशाला एक बहुत व्यस्त जगह थी जहां विभिन्न प्रकार के ट्रेड्समैन हर समय काम करते रहते थे। गुब्बारा उड़ानों और पेलोड के लिए विभिन्न उपकरणों का निर्माण पूरे जोरों पर था; वैज्ञानिक और इंजीनियर कार्यशाला में आते थे और अपने अनुसंधान कार्य की आवश्यकताओं को समझाते रहते थे। वे कहते थे, पीआरएल ट्रेड्समैन और तकनीशियन विमान को भी ठीक कर सकते हैं!

मुझ में बसा लड़का वापस मद्रास लौट जाने के लिए तरसता था, जहां से वह आया था। यह जानने के बाद कि केन्द्र सरकार की नौकरी में मेरा स्थानांतरण होता रहेगा, जिसका मेरी इस नौकरी में कोई मौका नहीं था, मैंने केंद्र सरकार की नौकरी ढूंढने की पूरी कोशिश की। मैंने वह पा भी ली थी। मुझे राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद - NPC (वाणिज्य एवं उद्योग विभाग के तहत) के लिए चुना गया था, जहां मुझे कुछ नहीं करना था, सिवाए रिपोर्ट और रिपोर्ट टाइप करने के। फिर भी, मैं वहां मद्रास स्थानांतरण की प्रिय उम्मीद में डेढ़ साल तक कार्य करता रहा। मैं कितना नौसिखिया था! मुझे पता चला कि स्टाफ संरचना में केवल वरिष्ठ सदस्यों को ही स्थानांतरित होने का मौका मिलता है, वह भी अधिकांशतया अपने पसंद के स्थान पर नहीं होता। सबसे खराब बात, मुझे एनपीसी में

समय पर वेतन नहीं मिला, और मुझे डेढ़ साल की परिवीक्षा के बाद भी स्थाई नहीं किया गया।

इसकी तुलना में, पीआरएल बहुत बेहतर जगह थी - वैज्ञानिकों के बीच रहने, घर में सब्सिडी वाले भोजन, हमारे अनुसार काम करने की स्वतंत्रता, उत्कृष्ट चिकित्सा लाभ और क्या नहीं! मैंने पीआरएल में वापस आने का फैसला किया। कई बार, जब हम पीड़ित होते हैं, तभी हम अतीत/वर्तमान में फर्क महसूस करते हैं।

“हमें खुशी होगी यदि अमेरिका में कुल 5 कंप्यूटर भी बिक सकें” - थॉमस वाटसन, अध्यक्ष, आईबीएम, 1945

पीआरएल में मेरा पुनः प्रवेश

मेरे पीआरएल में वापस आने पर फिर से श्री गोपी ने मेरी मदद की। मैं 1976 में डेढ़ साल बाद पीआरएल में वापस आया तो मैंने एक छोटा सा बदलाव देखा। जब मैंने 1975 के शुरू में पीआरएल छोड़ी थी, तो मुख्य भवन में केवल भूतल और तीन मंजिल थे। लेकिन जब मैं सितंबर 1976 में फिर से वापस आया, तब आठ मंजिल की ऊंची इमारत बन चुकी थी। यह वह समय था जब पीआरएल का विकास पूरे जोरों पर था। दर्जनों स्टाफ सदस्य भर्ती किये गये थे। इस बार मैं जनसंपर्क विभाग में लगाया गया था और पीआरएल में मेरी यात्रा थोड़े अंतराल के बाद जारी हो गई थी।

सामान्य तौर पर, सभी मनुष्य दूसरों के लिए उपयोगी और अच्छे होने के लिए ही बने होते हैं। कई लोग दूसरों के प्रति

चित्र 1: लेखक अपने कार्यालय में अपने सहयोगियों के साथ

अच्छा बने रहने के लिए समय, धन और ऊर्जा को खर्च करते हैं, लेकिन यहां जो हमारे पास आते थे उनके प्रति अच्छा होने और अन्य लोगों की सहायता करने के लिए मुझे भुगतान किया जाता था। वास्तव में मैं एक धन्य आत्मा हूँ! मेरे बॉस और तत्कालीन पीआरओ सुशीलभाई शाह ने धीरे-धीरे मुझ पर नियंत्रण कर लिया और आज जो मैं हूं वह उन्हीं की देन है।

मैंने श्रीमती डी.सी. जोशी से भी बहुत कुछ सीखा है, जिनके साथ मैं जनसंपर्क विभाग में दो दशकों से अधिक समय से

जुड़ा रहा था। क्या यह विधि का विधान था जो मुझे पीआरएल और जनसंपर्क विभाग में लेकर आया था?

कार्यालय में काम करने के अलावा, मैं कुछ ज्यादा नहीं कर रहा था। सुशील भाई ने मुझे कॉलेज में भर्ती होने और डिग्री प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुझे अपना समय बर्बाद करते देखते हुए, उन्होंने मुझे पीआरएल के नजदीकी सहजानंद कॉलेज में भर्ती होने के लिए एक आवेदन पत्र मंगवाकर दिया। दरअसल, इस गतिविधि के कारण ही, मेरा नाम मेरे डिग्री प्रमाण पत्र में और उसके बाद मेरे पासपोर्ट में वी. रंगनाथन से आयंगर रंगनाथन वीरराघवन हो गया। चेन्नई में, जहां मैं पला-बढ़ा था, जब हम स्नातक डिग्री के लिए कॉलेज में भर्ती होते हैं, तो हमें हर साल प्रवेश लेने की जरूरत नहीं होती; उदाहरण के लिए, यदि कोई पहले वर्ष की परीक्षा पास कर लेता है, तो उसका नाम दूसरे वर्ष के पाठ्यक्रम में स्वतः दिखाई देता है। लेकिन अहमदाबाद में, जब मैंने पहले वर्ष की परीक्षा पास कर ली तो बिना यह जानते हुए कि मुझे दूसरे वर्ष में प्रवेश लेना पड़ेगा, मैं सीधे द्वितीय वर्ष की कक्षा में चला गया और उपस्थित हो गया। जब मेरा नाम उपस्थिति के लिए नहीं बोला गया, तो मैंने अधिकारियों से संपर्क किया और मुझे पता चला कि मैंने दूसरे वर्ष के लिए अनिवार्य प्रवेश नहीं लिया

और यह कक्षा भर चुकी थी। मैंने अपनी समस्या के साथ सुशीलभाई से संपर्क किया, जिन्होंने कॉलेज के प्राचार्य से संपर्क किया और मुझे दूसरे वर्ष में प्रवेश मिल गया। इसके बाद, मैंने तीसरे साल में प्रवेश के लिए इस प्रक्रिया का पालन किया।

मेरी दिनचर्या कुछ इस तरह थी, सुबह जल्दी उठ जाओ, तैयार हो जाओ, कॉलेज में 6.30 से 9.30 तक रहो और उसके बाद पीआरएल पहुंचो। उन दिनों पीआरएल का समय 9 बजे से 5 बजे तक था जिसमें दूसरे और चौथे शनिवार को छुट्टी रहती थी। 9 बजे पीआरएल पहुंचने के लिए, मैं कक्षा से 8.45 बजे तक निकल पड़ता था और ठीक 9 बजे पीआरएल पहुंच जाता था। पीआरएल में उन दिनों पंच कार्ड का बहुत कड़ाई से और सख्ती से पालन किया जाता था। यदि कोई भी 9 बजकर 1 मिनट पर भी पहुंचा/पंच किया, तो उसके खाते से आधे दिन की छुट्टी काट ली जाती थी। बाद में कई अनुरोधों और मांगों के बाद, हमें हर रोज 5 मिनट का अनुग्रह समय दिया गया, जिसके साथ एक महीने में 3 दिन 20 मिनट का अनुग्रह समय दिया गया था। अब 70 और 80 के दशक की तुलना में कर्मचारियों को अपनी ड्यूटी पर आना-जाना कुछ आसान हो गया है।

मैंने स्नातक स्तर की पढ़ाई समाप्त की और जन संपर्क में डिप्लोमा कोर्स जारी रखा। लेकिन मुझे लगता है कि पीआरएल में काम करने के मेरे अनुभव ने मुझे अपने स्नातक और डिप्लोमा से ज्यादा जीवन में मदद की।

सबकी तरह, मेरे परिवार को भी कुछ अतिरिक्त पैसे की आवश्यकता रहती थी। तो इन कुछ वर्षों के दौरान मेरा कार्य कॉलेज-पीआरएल-अंशकालिक जॉब-स्टडीज और फिर आधी रात तक पीआरएल में अतिरिक्त जॉब टाइपिंग कार्य होता था ताकि उस आवश्यकता को पूरा किया जा सके। आज के दिनों की तरह, कंप्यूटर के बिना उन दिनों, शोधार्थी हमें अपने शोध प्रबंधों के हस्तलिखित पांडुलिपियां देते थे, जिन्हें हम स्टैंसिल पर प्रिंट करते थे और आवश्यक प्रतियां साइक्लोस्टाइल करते थे। स्टैंसिल पर टाइप के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता थी और पीआरएल में मेरे सहित कुछ लोग इसमें निपुण थे। हम कीबोर्ड को न जोर से और न ही धीरे से दबा सकते थे; क्योंकि जोर से दबाने पर, स्याही अधिक प्रवाहित होती है और मुद्रित शीटों पर धब्बा पड़ जाता था और धीरे से दबाने पर, साइक्लोस्टिलिंग करते समय स्याही स्टैंसिल में से ठीक से प्रवाहित नहीं होती, जिससे उसको ठीक से नहीं पढ़ सकते थे। इस तरह छात्रों में हमारी एक प्रकार की मांग थी,

क्योंकि स्वाभाविक रूप से सभी लोग एक अच्छी गुणवत्ता वाली थीसिस चाहते थे।

इससे मुझे हमारी टाइपिंग की गति की याद आई है। हम सभी को अच्छे टाइपिस्ट होने के लिए न्यूनतम गलतियों के साथ 40 शब्द प्रति मिनट की गति के साथ टाइप करना होता था। उन दिनों, टाइपिस्ट्स एसोसिएशन था, जिसका स्थानीय चैप्टर स्पीड टाइपिंग प्रतियोगिताएं आयोजित करता था जिनमें पीआरएल और कुछ भारतीय प्रबंधन संस्थान और शहर में अन्य संस्थान से कुछ टाइपिस्ट भाग लेते थे। हम सभी की लगभग 55-60 शब्द प्रति मिनट की गति थी। इलेक्ट्रिक और फिर इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर के आगमन के साथ यह गति 90-100 शब्द प्रति मिनट हो गई। मुझे एसोसिएशन से टाइपिंग में उत्कृष्टता का प्रमाण पत्र भी दिया गया था।

लगभग 1977-78 के दौरान विभिन्न घटनाओं के कारण स्टाफ सदस्यों में कुछ असंतुष्टि और नाराजगी थी। स्टाफ कल्याण संघ ने अपने सदस्यों की बैठक बुलाई, जिसमें यह घोषणा की गई कि शीघ्र ही पीआरएल कर्मचारियों की अपनी यूनियन होगी। अधिकांश सदस्य इस जानकारी को पचा नहीं पा रहे थे क्योंकि हम सभी ने सोचा था कि केवल उद्योग में

ही कर्मचारी यूनियन के पंजीकरण के लिए आवेदन किया जा सकता है और पीआरएल एक अनुसंधान संस्थान है, अतः यह केवल एक सपना ही हो सकता है। लेकिन अंततः, कर्मचारी यूनियन का गठन किया गया, पंजीकृत हो गयी और ऐसे-ऐसे कार्य-कलाप किए गए जिनसे आगे चलकर कर्मचारियों और प्रबंधन को बहुत गंभीरता से प्रभावित किया। नारेबाजी करना, पीआरएल के अंदर और बाहर के पर्चे/पोस्टर चिपकाना कुछ समय तक चला। सीआईएसएफ के जवान इन गतिविधियों को सीमित करने की कोशिश में लगे रहते थे और कार्यकर्ता अपने दृष्टिकोण में बहुत कल्पनाशील थे ताकि वे सीआईएसएफ जवानों की पकड़ में न आ सकें। प्रबंधन में निर्णयकर्ताओं के लिए और जिन्हें अंततः निलंबित और/या निकाल दिया गया उनके लिए यह बहुत गंभीर मामला था और अन्य लोगों के लिए केवल मनोरंजन था।

अचानक, पीआरएल में लॉक आउट घोषित कर दिया गया और किसी को भी इसके परिसर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। हम में से ज्यादातर लोगों की बैंक पासबुक और चैक बुक पीआरएल में हमारे ऑफिस रूम में थी। हमारे बैंक खातों से पैसे निकालना भी मुश्किल हो गया था। यूनियन ने कर्मचारियों के 24 घंटे का क्रमिक उपवास (रिले फास्ट)

आयोजित किया; हर रोज दो व्यक्ति। मैंने पहले कभी भी धार्मिक आधार पर या किसी और वजह से एक दिन के लिए भी उपवास नहीं किया था, लेकिन मुझे उस उपवास में बैठने को कहा गया था और मैंने अपने जीवनकाल में इसी एक दिन के लिए उपवास किया था! हालांकि, मैंने अपने जीवन में कई दिन 'मौन व्रत' किया है। यूनियन और प्रबंधन दोनों लगभग सभी मुद्दों पर अड़े हुए थे।

अंतरिक्ष विभाग के तत्कालीन अपर सचिव, श्री टी.एन. शेषन, जो बाद में मुख्य निर्वाचन आयुक्त बने, उनसे पीआरएल प्रबंधन और पीआरएल कर्मचारी यूनियन के कुछ प्रतिनिधियों ने पीआरएल गेस्ट हाउस में इन समस्याओं से निपटने के लिए उनसे मुलाकात की । अंत में, एक महीने से भी अधिक समय के बाद, हमें परिसर में प्रवेश करने और हमारे कर्तव्यों को पूरा करने की अनुमति दी गई। फिर भी, लॉक-आउट के बाद पीआरएल में काम करना वैसा नहीं था। कोई प्रबंधन समर्थक है या कोई यूनियन समर्थक है, यह भावना पीआरएल परिसर में आने वाले कुछ समय तक बनी रही।

यहां मैं कुछ घटनाओं को बताना चाहता हूं। चूंकि मैं एक कामकाजी छात्र था, मैंने 6.30 से 9.30 बजे के बीच सुबह

की कक्षाएं चुनी, जिनमें से मैं और कुछ अन्य केवल 8.50 बजे तक रहते थे और फिर तत्काल अपने संबंधित कार्यालयों में चले जाते थे। ऐसा करने के लिए, हम आखिरी बैंच पर बैठते थे ताकि हम किसी को परेशान किए बिना कक्षा छोड़ सकें। हमारा महाविद्यालय खेल के लिए विख्यात था और कई ट्राफियां हमारे प्रिंसिपल प्रोफेसर शास्त्री के कमरे में प्रदर्शित की गई थी। एक बार प्रिंसिपल ने मेरे लिए संदेश भेजा कि मैं उनके कमरे में आकर मिलूं, जिसे मैंने तुरंत किया। उन्होंने कहा, "देखो, आयंगर, हमारे कॉलेज के छात्र सभी खेलों की गतिविधियों में भाग लेते हैं और हमें काफी कुछ ट्राफियां भी मिलती हैं, लेकिन इस साल मैं चाहता हूं कि आप वार्षिक वक्तव्य प्रतियोगिता में भाग लें और मैं आप से ना नहीं सुनना चाहता"। उनके प्रस्ताव पर सहमति देते हुए, मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे मुझे आयंगर ना कहकर रंगनाथन कहें। मैंने भी बहुत ईमानदारी से प्रतियोगिता के लिए तैयारी की और दूसरा पुरस्कार जीता।

अपनी स्नातक स्तर की पढ़ाई और सार्वजनिक संबंधों में डिप्लोमा पूरा करने के बाद, मैंने लगभग पूरे देश में बेहतर पद के लिए आवेदन करना शुरू कर दिया। गृहनगर में जाने के विचार को भूल जाने के बाद, अब मैं तथाकथित पेशेवर सीढ़ी पर चढ़ने के लिए कहीं भी जाने के लिए तैयार था। कुछ

चित्र 2: लेखक कॉलेज में एक भाषण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

स्थानों पर मुझे बेहतर पदों के लिए नियुक्ति आदेश भी मिले। लेकिन विभिन्न व्यक्तिगत कारणों के कारण, मैंने ऑफ़र को अस्वीकार कर दिया। इस बीच, मैं प्रोफेसर धर्म पाल अग्रवाल, अत्यधिक वरिष्ठ प्रोफेसर और पुरातत्व-जल विज्ञान क्षेत्र के अध्यक्ष के साथ व्यक्तिगत संपर्क में आया, जिनके लिए मैंने कुछ टाइपिंग और सचिवीय काम किए थे। वे मेरे काम और व्यवहार से बहुत प्रभावित थे, अतः उन्होंने मुझे उस संस्थान में पर्यवेक्षक पद के लिए विचार करने की पेशकश की, जहां

वे निदेशक के रूप में जाने वाले थे। दुर्भाग्य से, कुछ कारणों के कारण, वे उस पद को स्वीकार नहीं कर सके और एक अच्छा मौका मेरे हाथ से निकल गया।

दूसरा एक उदयपुर सौर वेधशाला (यू.एस.ओ.) में था। तब यू.एस.ओ. का प्रबंध पीआरएल द्वारा किया जाता था; उनके कर्मचारी पीआरएल कर्मचारी नहीं थे। यू.एस.ओ. के तत्कालीन निदेशक और संस्थापक प्रो. अरविंद भटनागर यूएसओ के लिए एक प्रशासनिक पर्यवेक्षक चाहते थे और उन्होंने पीआरएल में उन उम्मीदवारों के एक साक्षात्कार के लिए व्यवस्था की, जिन्होंने पद के लिए आवेदन किया था।

"प्रो. गोडार्ड को बल और प्रतिबल के बीच का संबंध पता नहीं है। उनके पास हाई स्कूल तक के विज्ञान का ज्ञान भी नहीं है। रॉकेट का उनका विचार केवल एक दिवास्वप्न है" - न्यू यॉर्क टाइम्स 1921 के संपादकीय में

प्रो. विक्रम साराभाई - एक महान व्यक्तित्व!

मेरा मानना है कि पीआरएल में अनुसंधान के लिए वातावरण बहुत अनुकूल था, और उसे प्रोफेसर विक्रम साराभाई ने बहुत सावधानी से ध्यानपूर्वक पोषित किया था, जो एक महान दूरदर्शी थे। मैंने एक बार हमारी लाइब्रेरी में प्रोफेसर साराभाई का उद्धरण पढ़ा था - 'रचनात्मक काम करने के लिए आवश्यक है कि हम गिलहरी और पक्षियों को देख सकें।' हम सभी सर्वसम्मति से बहुत खुशी से स्वीकार करेंगे कि पीआरएल एक ऐसा स्थान है जो रचनात्मकता को बढ़ावा देता है और अभिनवता को बढ़ावा देता है। हम में से कितने भारतीयों को ऐसी जगह पर काम करने का मौका मिलता है जहां विशाल

लॉन हैं, जहां कभी-कभी हमें साँप दिख जाते हैं और जहां मोर आनंदित होकर अक्सर नृत्य करते हैं? अन्य जगहों पर, काम की मांग हमें परिवार के साथ समय बिताने का अवसर कम देती है या नहीं देती, जिससे अनावश्यक तनाव और थकान हो जाती है। कार्य और परिवार दोनों जीवन के मुख्य भाग हैं, इनमें से किसी को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। यही कारण है कि खुश और स्वस्थ जीवन जीने के लिए हमें काम और व्यक्तिगत जीवन के बीच एक सही संतुलन को बनाए रखने की जरूरत होती है। अपने जीवन के दोनों पहलुओं का अर्थ है कि आपको समान रूप से महत्व देना होगा ताकि किसी को दूसरे की कीमत पर कोई नुकसान न पहुंचे। लंबे समय में, दोनों से प्राप्त आनन्द, खुशी और निर्वाह प्रयास के लायक होते हैं। पीआरएल में यह बिल्कुल संभव है, क्योंकि लगभग सभी स्टाफ सदस्य ऐसा करना चाहेंगे।

यहां उल्लेख करना अत्यधिक प्रासंगिक और उपयुक्त है कि पीआरएल न केवल वातावरण के कारण काम करने के लिए एक बेहतर जगह है, बल्कि काम करने की स्वतंत्रता के मामले में भी इसकी विशिष्टता है। अधिकांशतः लोकतांत्रिक व्यवस्था होने के कारण हम संस्थान के विकास और वृद्धि के लिए विचारों को व्यक्त और योगदान कर पाते हैं। हमारे विचार

चित्र 3: पीआरएल में अविश्वसनीय रूप से अद्भुत वातावरण

और सुझाव की प्रभाविकता संस्थापक की सोच के साथ मेल खाती है। यह, बदले में, हर किसी को संस्थान के साथ बढ़ने का अवसर प्रदान करता है।

मुझे अपने वरिष्ठ लोगों से पता चला था कि प्रोफेसर साराभाई के पास पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी के साथ सीधे हॉटलाइन फोन की सुविधा थी। तब अहमदाबाद हवाई अड्डे पर सुबह और शाम को दिल्ली और

बॉम्बे के लिए एक-एक उड़ान थी। जब भी वे हवाई यात्रा करते थे, तब उनके पहुंचने तक विमान इंतजार करता था। ऐसा उनका प्रभाव और व्यक्तित्व था! उनका 52 वर्ष की अल्पायु में ही असामयिक निधन हो गया, जो पीआरएल के लिए विशेष रूप से और आमतौर पर वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक बहुत बड़ा नुकसान था। गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर की यही उम्र थी जब उन्हें साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था! अगर प्रोफेसर साराभाई कुछ और वर्षों तक जीते, तो उन्होंने महान गौरव व ख्याति प्राप्त की होती और शायद अंतरिक्ष विभाग का मुख्यालय बेंगलूरु के बजाय अहमदाबाद में होता!

“कंप्यूटरों का इस्तेमाल केवल बड़ी दुकानों और कार्यालयों में ही किया जाएगा। घरों में इसका कोई उपयोग नहीं होगा?” – डिजिटल कंप्यूटर कंपनी के प्रमुख, श्री केन ओल्सन, 1977

पीआरएल में मित्र और सहकर्मी

1978-80 के आसपास, (अब प्रोफेसर और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक) आर. रमेश और ए. जयरामन पीएचडी करने के लिए पीआरएल ज्वाइन की। मुझे पता चला कि उन दिनों पीआरएल में अन्य संस्थानों की तुलना में रिसर्च स्कॉलर्स को हर महीने कुछ ज्यादा वजीफे का भुगतान किया जाता था, जो निश्चित रूप से पीआरएल के लिए कुछ मेधावी लोगों को आकर्षित करता था।

जल्द ही मैं रमेश और जयरामन (अब प्रोफेसर और निदेशक, राष्ट्रीय वायुमंडलीय अनुसंधान प्रयोगशाला, गादंकी) दोनों का करीबी दोस्त बन गया क्योंकि हम सभी एक ही राज्य के रहने वाले थे और समान पसंद और नापसंद के कारण अब भी हैं।

फिर आर.वी. कृष्णमूर्ति (अब वेस्टर्न मिशिगन यूनिवर्सिटी, अमेरिका में एक वरिष्ठ प्रोफेसर) हमारे समूह में शामिल हुए। मैंने अपना खाली समय उनके साथ फिल्में देखने, साइकिल पर शहर घूमने और रविवार शाम को बाहर खाने में बिताता था क्योंकि छात्रों के मैस में रविवार को शाम को भोजन नहीं दिया जाता था। हम सभी ने एक साथ मजेदार समय बिताया था। मेरे स्नातक और डिप्लोमा पढ़ाई के बाद, मैं शाम को और छुट्टियों में छात्रावास क्षेत्र में फिरता रहता था; कोई बाहरी आदमी सोचता होगी कि मैं भी पीएच डी का छात्र हूँ!

सच कहूँ तो, मैं लाभार्थी था, क्योंकि अब मुझे बहुत प्रसिद्ध, उस समय उभरते हुए वैज्ञानिकों के साहचर्य से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। मैं अपने आपको, प्रबुद्ध और व्यापक रूप से यात्रा करने वाले व्यक्तित्वों के बीच पीआरएल में काम करने के लिए वास्तव में सौभाग्यशाली मानता हूं। कितने प्रशासनिक लोग युवा वैज्ञानिक पुरस्कार विजेताओं और प्रो. भटनागर पुरस्कार विजेताओं के साथ दोस्त होने का दावा कर सकते हैं।

प्रोफेसर विक्रम साराभाई को धन्यवाद जिनका व्यापारी समुदाय में पैदा होने के बावजूद, वैज्ञानिक प्रयोगशाला शुरू

चित्र 4: पीआरएल में अपने मित्र प्रोफेसर आर.वी. कृष्णमूर्ति, प्रोफेसर रमेश और प्रोफेसर एस. रामचद्रन के साथ लेखक

करने के लिए झुकाव था और संसाधन थे, जिसने अब भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए काफी योगदान दिया है। मैंने, एक प्रशासनिक स्टाफ सदस्य के रूप में, इसके लिए कुछ न कुछ योगदान जरूर किया है।

मैं प्रोफेसर रमेश और प्रोफेसर जनार्दन के साथ सानिध्य से

भी बेहद लाभान्वित हुआ, जिन्होंने मुझे किताबों से परिचय कराया। प्रोफेसर रमेश के पास विभिन्न विषयों पर पुस्तकों का एक बड़ा संग्रह है। उन्होंने मुझे पढ़ने और आनंद लेने के लिए बहुत उदारता से बहुत सारी किताबें दीं। मैं उनके इस कार्य के लिए हमेशा उनका ऋणी रहूंगा। उन्होंने मुझे क्रॉसवर्ड पहेली हल करना भी सिखाया। जल्द ही, क्रॉसवर्ड को हल करना मेरे लिए समय बिताने का साधन बन गया, जिसे आज भी सप्ताहांत के दौरान मैं करता हूं। यद्यापि तमिलनाडु के मूल निवासी होने के कारण, जहां हिंदी पूरी तरह से उपेक्षित थी (इसके कार्यान्वयन के खिलाफ जोरदार ढंग से उत्तेजित), वहीं प्रो. रमेश हिंदी के विद्वान हैं और उन्होंने हिंदी पाखवाड़ों में कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया था।

एक समय आया, जब हिंदी कार्यक्रमों में भाग लेने वाले लोगों ने कहना शुरू कर दिया 'ओह, अगर प्रोफेसर रमेश भाग ले रहे हैं, तो उनका पहला इनाम पक्का है'। इसे बार-बार सुनकर, उन्होंने अब और अधिक भाग नहीं लेने और दूसरों को जीतने का मौका देने का फैसला किया। इसको संकेत रूप में लेते हुए मैंने भी खेलों में भाग लेना बंद कर दिया, जिससे युवाओं को आगे आने के लिए रास्ता बन सके। हालांकि, खेल के लिए मेरी दिलचस्पी और प्यार मुझे इन गतिविधियों में

भाग लेने वाले पीआरएल स्पोर्ट्स टीमों के कंटिन्जेंट मैनेजर के रूप में अंतरिक्ष विभाग/इसरो की अलग-अलग इकाइयों में जाने को मिला।

पढ़ने की आदत के बारे में लिखते हुए, समय बीतने के साथ, मुझे लगता है कि मैंने जीवन को बेहतर समझना शुरू कर दिया और एक तरह से इसके बारे में दार्शनिक हो गया। मैं जीवन के उतार-चढ़ाव को और आसानी से ले सकता हूं। पढ़ने से, मैंने मानव स्वभाव और लोगों का जिन कठिनाइयों से वास्ता पड़ता है उनके बारे में अधिक जानता हूं। पीआरएल में जनसंपर्क अनुभाग में मेरी ड्यूटी का निर्वहन करने में लोगों से मिलने और किसी तरह की परेशानी को हल करने में मेरी वर्तमान स्थिति के साथ, मुझे अन्य लोगों की भावनाओं और उनकी आकांक्षाओं के प्रति अधिक संवेदनशील बना दिया। इससे मैंने अपने आप पर ध्यान केंद्रित करना बंद कर दिया, जिसने मुझे अपने, मेरी वर्तमान स्थिति के बारे में बेहतर महसूस कराया।

प्रोफेसर जनार्दन, वैज्ञानिक होने के अलावा, एक बहुत ही जानकार व्यक्ति हैं और वे हमें न सिर्फ सूर्य के बारे में बल्कि

बहुत कुछ बता सकते हैं। उन्होंने कई बार मुझे कुछ पुस्तकों के बारे में बताया जो पीआरएल लाइब्रेरी में उपलब्ध हैं और मुझे उनको पढ़ने के लिए कहा, जो मैंने किया और उस हद तक समझदार हो गया। इसके अलावा, वे मुझे कुछ वैज्ञानिक अवलोकनों और घटनाओं के बारे में स्पष्ट तरीके से समझाते थे। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा। मैंने उन्हें एक अच्छा पक्षी विज्ञानी भी पाया। वे विभिन्न पक्षी प्रजातियों के अवलोकन के अपने अनुभवों के बारे में मुझे ज़ोर देकर बताते थे। और मुझे उन विभिन्न पक्षियों की तस्वीरें दिखाई, जो उसने खुद खींची थी - उन्हें एक अच्छा फोटोग्राफर भी होना चाहिए! मैं उन्हें एक अच्छा शिक्षक एवं वैज्ञानिक मानता हूं। जो ज्ञान उन्होंने मेरे साथ साझा किया मैं उन सभी के लिए उनका आभारी हूं।

यहां पर प्रोफेसर के. आर. रामनाथन, पीआरएल के संस्थापक निदेशक, और पी. आर. पिशारोटी, एक बहुत वरिष्ठ और विभूषित वैज्ञानिक के बारे में यहां उल्लेख करना लिए उचित होगा। अफसोस, अब दोनों जीवित नहीं हैं। प्रोफेसर रामनाथन, जिनके नाम पर हमारा वर्तमान मुख्य ऑडिटोरियम है। वे बहुत पुरानी ‘स्टैंडर्ड’ कार में, स्वयं ड्राइविंग करके पीआरएल में आते थे। दोनों प्रोफेसर रामनाथन और पिशारोटी

बहुत सरल इंसान थे। उनकी जरूरतें न्यूनतम थी; इतना अधिक जो निम्नलिखित घटना से पता चलता है।

1980 के दशक में, विदेशों में वैज्ञानिक उद्देश्यों के लिए विदेश जाने के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्त करना बहुत कठिन काम था। मैं विदेश जाने वाले प्रत्येक वैज्ञानिक के लिए 10–12 पेज का आवेदन पत्र भरता था। भारतीय रिजर्व बैंक में आवेदन पत्र जमा करने के बाद भी, हमेशा कुछ न कुछ पूछताछ की जाती थी, जिसका उत्तर भारतीय रिज़र्व बैंक के संबंधित अधिकारी की संतुष्टि वाला होना चाहिए। एक बार, प्रोफेसर रामनाथन और पिशारोटी इंग्लैंड की यात्रा पर जाने वाले थे, जिसके लिए लगभग 100 यूके पाउंड की देने के लिए आवेदन किया गया था।

चूंकि दोनों वैज्ञानिक पूरे विश्व में बहुत प्रतिष्ठित और सम्मानित थे, इसलिए उनके रहने और ठहरने का इंतजाम आम तौर पर उनके मेजबानों द्वारा किया जाता था और उन्हें दैनिक भत्ते की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन केवल आकस्मिक खर्चों के लिए मामूली राशि की जरूरत होती थी। लेकिन चूंकि आरबीआई द्वारा वांछित दस्तावेज उपलब्ध नहीं थे, इसलिए मैं उन्हें आरबीआई के बारे में पूछताछ और

अपर्याप्त दस्तावेजों के बारे में बताया। मुझे बहुत विस्मय हुआ, जब उन दोनों ने बस मुझे सूचित किया 'चिंता न करें, अगर वे एक्सचेंज जारी नहीं करते हैं, तो हम अपने दम पर प्रबंध करेंगे। हम अपने कपड़े धो लेंगे, और चूंकि हम बहुत बूढ़े हैं, तो हमारी मेजबान हमारी अधिकांश आवश्यकताओं का ध्यान रखेंगे।' मुझे उस दिन एहसास हुआ कि 'सादा जीवन और उच्च विचार' का अर्थ क्या होता है।

प्रोफेसर पिशारोटी ने एक बार मुझसे किसी व्यक्ति का पता देने को कहा, जिसे मैंने एक खाली कागज में लिखा था और उन्हें दे दिया। उन्होंने मुझे पता लिखने के लिए पूरा पेज बर्बाद करने के लिए डांटा। उसने मुझे सख्ती से निर्देश दिया कि मुझे एक तरफ इस्तेमाल की गई शीट रखनी चाहिए और उनका इस्तेमाल ऐसे कामों के लिए करना चाहिए। उन्होंने मुझे कमरे से बाहर जाने से पहले लाइट और पंखे बंद करने की सलाह भी दी। मैं अभी भी ऐसा करता हूं और अपने कनिष्ठ लोगों को निर्देश देता हूं जो मेरे साथ काम करते हैं और जो मेरी बात सुनते हैं। लेकिन आजकल मैं देखता हूं कि बहुत लोग कमरे से बाहर निकलते समय पंखे और लाइट बंद नहीं करते। वे अनावश्यक और अवांछित ई-मेल का प्रिंट लेने या टेलीफोन नंबर लिखने के लिए या कुछ ऐसी चीज लिखने

के लिए कागज की नई शीट बर्बाद करते हैं। मैं यहां सभी से अनुरोध करता हूं कि कागज और बिजली के उपयोग बहुत सोच-समझ कर करें। पहले से धन्यवाद!

प्रोफेसर रामनाथन, एक मौसमविज्ञानी होने के कारण पेड़ों के भी शौकीन थे। एक बार, पीआरएल में एक पार्किंग का निर्माण करने के लिए कुछ बड़े पेड़ों को काटना था, जहां अब रामनाथन ऑडिटोरियम है। जब तत्कालीन सिविल इंजीनियर की देखरेख के तहत, यह काम आगे बढ़ना था। प्रोफेसर रामनाथन ने चिपको आंदोलन खड़ा किया - पेड़ों से लिपटते हुए, जिससे मजदूर अपना काम आगे नहीं बढ़ा सके! पेड़ों और पर्यावरण के प्रति उनकी ऐसी निष्ठा थी और इसे लागू करने में उनकी ईमानदारी थी। बाद में, प्रोफेसर रामनाथन की मृत्यु के बाद, आखिरकार, उन सभी पेड़ों को काट दिया गया और क्या विडंबना है कि ऑडिटोरियम का नाम भी उनके नाम पर ही रखा गया!

रामनाथन ऑडिटोरियम की बात करते हुए, यह मुझे उन दिनों की याद दिलाता है जब यह ऑडिटोरियम पीआरएल में नहीं बना था और हम सभी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन और वार्षिक विक्रम जयंती - प्रोफेसर विक्रम साराभाई का जन्मदिन

के सम्मान में वैज्ञानिक समारोह के आयोजन के लिए, प्रत्येक 12 अगस्त को बार-बार अहमदाबाद टैक्सटाइल इंडस्ट्रीज रिसर्च एसोसियेशन (अटीरा) में उनकी जगह का उपयोग करते थे। जैसा कि आप सभी जानते हैं, अगस्त में मानसून बहुत सक्रिय हो जाता है, निश्चित रूप से बारिश होती है और सभी को अनकही असुविधाओं में डाल दिया जाता है। जल्द ही पीआरएल प्रबंधन को अंतरिक्ष विभाग से पीआरएल परिसर में एक ऑडिटोरियम बनाने की इजाजत मिल गई और जैसा कि आप देख सकते हैं हम सब समय-समय पर वहां आयोजित कार्यक्रमों का आनंद ले सकते हैं।

हालांकि ये अच्छी चीजें हुई, लेकिन पीआरएल और उसके परिसर में कुछ आत्महत्या की घटनाओं और दिल का दौरा पड़ने जैसी कुछ अप्रिय घटनाएं भी हुईं। एक श्री रमेश शर्मा, पीआरएल के एक इंजिनियर, हमारी मुख्य इमारत की 6ठी मंजिल से कूद कर अपनी जान गंवा दी। यह एक वीभत्स दृश्य था। पुलिस द्वारा अपनी ड्यूटी निभाने के लिए आने के बाद, उस क्षेत्र को कुछ समय के लिए घेर दिया गया था। पीआरएल के लोगों को सामान्य स्थिति में आने में कुछ समय लगा। दूसरा, कुलश्रेष्ठ नामक एक शोध छात्र था, जिसने छात्रावास के कमरे में पंखे से लटककर अपनी जान दे दी थी। चूंकि मैं

एस्टेट विभाग के कामकाज में शामिल था। अतः हमें पुलिस से संपर्क करने, औपचारिकताएं पूरी करने, छात्र के माता-पिता को मिलने में कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा था।

एक इंजिनियर श्री देवगन पीआरएल क्वार्टर में रह रहे थे। वास्तव में इस घटना से कुछ ही घंटे पहले कार्डियोलॉजी विशेषज्ञ के पास गए थे। दवा देने के बाद उन्हें घर भेजा गया। कुछ घंटों से भी कम समय में घर पहुंचने पर, स्नान करने के लिए बाथ रूम गए, वहां उन्हें गंभीर दिल का दौरा पड़ा जो घातक सिद्ध हुआ। यहां फिर से, सामान्य स्थिति में वापस आने से पहले हमारे मेडिकल ऑफिसर और पुलिस ने कुछ औपचारिकताओं निभाई थी। जब भी मैं पुलिस का जिक्र करता हूं, ऐसा हुआ कि मुझे चीजों को पूरा करने के लिए पुलिस बल से बातचीत करनी पड़ती थी। यहां तक कि जब मैं अपने पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए पीआरएल के लोगों की मदद कर रहा था, तब भी इसमें विभिन्न क्षेत्रीय पुलिस स्टेशनों और पुलिस आयुक्त कार्यालय के कर्मचारियों से संपर्क करना शामिल था।

1980 के दशक के दौरान, हम पीआरएल में फिल्म एप्रिसियेशन ग्रुप (हम इसे एफएजी कहते थे) के नाम पर एक फिल्म

सोसाइटी चलाते थे, जिसमें लगभग 100 सदस्य शामिल थे। उनमें से ज्यादातर रिसर्च स्कॉलर्स और वैज्ञानिक थे। हम इसे फिल्म फेडरेशन ऑफ इंडिया के साथ पंजीकृत कर चुके थे जो पूरे विश्व में निर्मित फिल्मों को नियमित रूप से भेजते रहते थे। एलायंस फ्रैन्काइज, भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम), अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र (सैक) और राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एनआईडी) की सक्रिय भागीदारी के साथ, हम एक दूसरे के साथ फिल्मों का आदान-प्रदान करते थे। मुझे फ़ेलीनी, सत्यजीत रे, बर्गमैन और कई अन्य प्रसिद्ध दिग्गजों की 'बाइसिकिल थीफ', 'पाथेर पांचाली' और 'सेवन एंड ए हाफ' जैसी शानदार फिल्मों को देखने का उत्कृष्ट अवसर मिला।

लगभग 10 वर्षों या उससे अधिक की अवधि में हमने एक-एक करके ज़िम्मेदारी ली और निजी उत्साह पर क्लब चलाया। कई बार, हमने अपना पैसा भी खर्च किया और इन फिल्मों को हासिल किया। फिल्मों के बाद, हम में से कुछ हॉल में रुकते थे और उस दिन की फिल्म पर चर्चा करते थे।

इस अवधि के दौरान पीआरएल में एक संगीत क्लब भी था जो कुछ संगीत प्रेमियों द्वारा चलाया जाता था। उन दिनों जैसा आप जानते हैं, सुनने के लिए केवल रेडियो और टू-इन-वन

थे। उनके पास भूतल व्याख्यान कक्ष में एक म्यूजिक सिस्टम लगाया हुआ था और संगीत प्रेमी लंच के दौरान वहां इकट्ठा होते थे और पुराने क्लासिक्स गाने सुनते थे। इससे बाद में उन्हें हिंदी पखवाड़ा समारोह में आयोजित अंताक्षरी प्रतियोगिता में भाग लेने में भी मदद मिली।

रेडियो के बारे में उल्लेख करते हुए यह कहना चाहता हूं कि अधिकांश युवाओं को पता नहीं होगा कि उन दिनों रेडियो और टेलीविजन का उपयोग करने के लिए लाइसेंस थे। लाइसेंस प्राप्त करने और हर साल इसे नवीनीकृत करने में बहुत कठिनाई होती थी। सौभाग्य से, अब वह सिस्टम बंद हो गया।

1980 के दशक के दौरान और उसके बाद पैदा हुए उन लोगों के लाभ के लिए टेलीविजन के विषय में एक बहुत दिलचस्प घटना का विवरण नीचे दे रहा हूं। 1987-88 के दौरान, सर्वव्यापी दूर दर्शन को छोड़कर अन्य कोई चैनल नहीं था और इसमें समाचार के अलावा केवल एकमात्र मनोरंजक कार्यक्रम रविवार की फिल्मों और 'चित्रहार' रहता था। हर रविवार को सुबह 'रामायण' का प्रसारण किया जाता था; इसके प्रसारण के दौरान शहरों में स्वघोषित कर्फ्यू लग जाता था; शहर की सड़कें और बाजार खाली हो जाते थे; विभिन्न

कार्यक्रमों को 'रामायण' प्रसारण समय को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया जाता था। होटलों, कारखानों और अस्पतालों में इस समय के दौरान बड़े पैमाने पर अनुपस्थिति रहती थी; यहां तक कि कम उपस्थिति से बचने के लिए कुछ चर्च सेवाओं का समय भी बदल दिया गया था। जबकि अन्य धार्मिक लोग 'रामायण' को मनोरंजन की दृष्टि से देखते थे, वहीं अधिकांश हिंदुओं ने इसे भक्ति और श्रद्धा से देखते थे। जो लोग मंदिरों में नहीं जा सकते थे, वे (श्वेत-श्याम) टेलीविजन सेटों के सामने दंडवत करते थे। उस समय ऐसी स्थिति थी; इसकी तुलना आज से करें - हम सैकड़ों चैनलों के साथ बिगड़ गए हैं!

"इस दुनिया में आविष्कार की जा सकने वाली सभी चीजों का आविष्कार मानव जाति ने कर लिया है। आविष्कार करने के लिए अब कुछ शेष नहीं है" - अमेरिका के चार्ल्स ड्यूएल, 1899

पासपोर्ट और विदेशी यात्रा

प्रशासनिक क्षेत्रों के कई पहलुओं में, वैज्ञानिक सम्मेलनों में भाग लेने के लिए वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को विदेश जाने में मदद करना एक बहुत ही रोचक और उत्साही कार्य था। एनओसी जारी करने से लेकर, आवेदन पत्र प्राप्त करने तक, पासपोर्ट कार्यालय को स्वीकार्य तरीके से उन्हें भरने, सभी आवश्यक दस्तावेज जमा करने, पुलिस सत्यापन करवाना कठिन और समय लेने वाली प्रक्रिया थी। लेकिन मुझे धीरे-धीरे यह कार्य रास आने लगा और जल्द ही पीआरएल स्टाफ ही नहीं, बल्कि भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) और अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र (सैक) के भी लोग पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए मुझसे संपर्क करने लगे थे। पीआरएल में इन चार दशकों की अवधि में, मैंने एक हजार से अधिक आवेदकों (कुछ वैज्ञानिकों

और इंजीनियरों को सफेद रंग के कार्यालयीन पासपोर्ट सहित) को पासपोर्ट प्राप्त करने में मदद की होगी; पच्चीस रुपये के शुल्क से लेकर जो धीरे-धीरे वर्तमान में एक हजार पांच सौ रुपये तक। इससे पहले, जिसने तैयार किया था उसकी हस्तलिपि के आधार पर पासपोर्ट में लिखा गया वर्णन खराब हो जाता था; कभी-कभी, लेखन फीका पड़ जाता था, अन्य समय अस्पष्ट हो जाता था जिससे यात्रियों के लिए परिहार्य समस्याएं पैदा हो जाती थी। पासपोर्ट के फोटो पेज की गुणवत्ता में भी सुधार करना वांछित था; फोटो पर चिपकी हुई सिलोफ़न शीट भूरी हो जाती थी और विदेशों में जा रहे यात्रियों को आप्रवासन अधिकारी संदिग्ध नजर से देखते थे। शुक्र है, हमारे पास अब बायोमीट्रिक पासपोर्ट हैं और उनमें कोई परिवर्तन या परिवर्धन नहीं किया जा सकता है; गुणवत्ता के स्वीकार्य मानक में भी सुधार हुआ है।

पासपोर्ट प्राप्त करने पर कार्य समाप्त नहीं होता, वो तो सिर्फ शुरुआत है। फिर वीजा प्राप्त करने की प्रक्रिया आती है। 90 के दशक के मध्य तक, हमें किसी भी यात्रा संबंधी सुविधाओं के लिए ट्रैवल एजेंटों के पास जाने की अनुमति नहीं थी; विदेश में यात्रा करने के लिए पासपोर्ट और टिकट जारी करने में जन संपर्क विभाग सीधे शामिल रहता था। कुछ लोगों

ने यह भी सोचा था कि मैं वास्तव में एयर इंडिया/इंडियन एयरलाइंस का ही कर्मचारी हूं क्योंकि मैं इन कार्यालयों में बहुत नियमित रूप से जाया करता था और मेरे काम पूरा करने के लिए वहां बहुत समय बिताना होता था। मैंने एयर इंडिया द्वारा आयोजित एक टिकट कोर्स भी किया, हालांकि यह पीआरएल की आवश्यकता नहीं थी। वास्तव में एयर इंडिया के अधिकारियों ने मुझे उस पाठ्यक्रम में नामांकन करने का प्रबंध किया था, हालांकि यह केवल एयरलाइंस के कर्मचारियों के लिए ही था। यह मुख्य रूप से इसलिए था कि मैं उनका काम आसान कर सकता था। पीआरएल यात्रियों की कुछ शिकायतों के कारण एयर इंडिया के कर्मचारियों के साथ मेरे दोस्ताना और साथ ही कष्टप्रद संबंध थे। लेकिन यह मेरा काम का हिस्सा था।

1979 के दौरान, जब मैं अपनी स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहा था, मुझे हवाई यात्रा करने का पहला मौका मिला। मैं मद्रास जाने की योजना बना रहा था जब पीआरएल के प्रो. बी.एल.के. सोमायाजुलु को इसके बारे में पता चला। वे एक प्रायोगिक उपकरण पार्सल को तत्काल मद्रास मौसम विज्ञान स्टेशन पर भेजना चाहते थे, विशेष रूप से एक जिम्मेदार और व्यक्तिगत तरीके से भेजना चाहते थे क्योंकि उपकरण

अत्यंत नाजुक था। उन्होंने मुझ पर विश्वास किया और मैंने मौका हासिल किया, 50% छात्र रियायत ली, केवल 208 रुपये का भुगतान किया और चेन्नई तक हवाई यात्रा की। इस घटना के बाद, मैंने कई सालों बाद ही हवाई यात्रा की - एयर इंडिया एलटीसी सुविधा पर। मैंने पीआरएल न्यूज, वॉल्यूम 21, दिसंबर 1993 में मेरा अपना अनुभव लिखा था। पाठकों के लाभ के लिए, मैं नीचे उसका पुन: वर्णन कर रहा हूं।

मेरा एलटीसी अनुभव

वी. रंगनाथन

अगर मैंने इस गर्मी में इसका उपयोग नहीं किया होता तो मैं अपनी एलटीसी का इससे काफी अच्छा आनंद उठा सकता था। ऐसा हुआ कि, सामान्य एक वर्ष के मुकाबले उस ब्लॉक के लिए एलटीसी विस्तारित वर्ष के अंत में गुजरात में प्लेग के डर के कारण डेढ़ साल तक बढ़ा दिया गया था।

काफी प्रयासों के बाद मैंने 2 टियर एसी में दक्षिण की ओर जाने वाली रेलगाड़ी द्वारा टिकट बुक कर लिया था। लगभग सभी दक्षिण भारतीय जानते हैं

कि गर्मियों में दक्षिणी की ओर जाने वाली उच्च श्रेणी की बुकिंग करना कितना मुश्किल है। अतः मैं उत्साहित था और महसूस कर रहा था कि दुनिया मेरे कदमों पर है।

इसके बाद अखबारों में घोषणा की गई कि राष्ट्रीय कैरियर, एयर इंडिया "एलटीसी योग्य" स्टाफ सदस्यों को कुछ चयनित शहरों में ले जाएंगे, जिनमें से मद्रास भी था, जहां मैंने जाने की योजना बनाई थी। पीआरएल में ऐसे पद पर होने के नाते जहां से मैं पात्र सदस्यों को देश और विदेश में विभिन्न स्थानों पर हवाई यात्रा पर भेजने में मदद करता हूं, मुझे इस जाल में फंसने का दुख हो रहा था। एयर इंडिया की घोषणा में कहा गया था कि "2 टियर एसी रेलवे टिकट की कीमत पर हवाई यात्रा" जिसमें छिपी बात थी "प्लस टैक्स"। चूंकि यह छिपा हुआ था, मेरी पत्नी ने स्वाभाविक रूप से इसे नहीं देखा और मुझे इस बारे में तंग करने लगी कि हमें "सिर्फ 2 टियर एसी रेलवे किराये में हवाई यात्रा का आनंद क्यों नहीं लेना चाहिए"। आखिरकार यह "जीवन भर का" मौका था और कोई बुद्धिमान व्यक्ति इसे छोड़ना

नहीं चाहेगा। मुझे करना पड़ा, क्योंकि कम से कम मेरी पत्नी के सामने मुझे बुद्धिमान दिखना था। और जब मैंने हवाई टिकट लिया तो मैं बुद्धिमान नहीं बल्कि अधिक बुद्धिमान बन गया, क्योंकि तभी मुझे टैक्स के भुगतान करने के बारे में पता चला।

हवाई यात्रा के लिए टिकट बुकिंग के बाद भी मैंने तुरंत हमारे रेलवे टिकट रद्द करने की हिम्मत नहीं की, ऐसा न हो कि एयरलाइन अपना मन बदल दे। आखिरकार मैंने अपना रेलवे टिकट रद्द कर दिया। मुझे वित्तीय झटका झेलना पड़ा, जैसे ग्रीष्मकालीन में 2 टियर एसी रेल आरक्षण को रद्द करने के दर्द के अलावा रद्दीकरण शुल्क। इन टिकटों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने में रेलवे स्टेशन में बहुत दर्दनाक समय बिताए जाने के बाद, रद्द करते हुए कितना बुरा लगता है - आपको यह उस स्थिति में होने पर ही पता चलेगा।

फिर “जाने” का दिन आया। हम सब, हमारी सर्वश्रेष्ठ पोशाक में हवाई अड्डे पर पहुंच गए। मैंने रेलवे स्टेशन तक पहुंचने के लिए एक नगण्य राशि चुकाई होती, जैसा कि सामान्य है, यहां मुझे टैक्सी में काफी

खर्च करना पड़ा - आखिरकार हम "उड़ने" जा रहे थे! चूंकि यह एक अंतरराष्ट्रीय उड़ान थी, हमें हवाई अड्डे पर 3 घंटे पहले पहुंच जाना था। नियमों से बंधे हुए, हम लगभग 4 घंटे पहले हवाई अड्डे पर पहुंच गए - सिर्फ सावधानी की दृष्टि से। मैं कभी भी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के अंदर नहीं गया था, अतः मैं विमान तक पहुंचने तक लोगों से पूछताछ करता रहा। हवाई अड्डे में परिवार के सदस्यों के साथ चार घंटे बिताने में काफी खर्चा करना पड़ा। और वास्तव में विमान में प्रवेश करने से पहले घंटों तक इंतजार करना वास्तव में एक परीक्षा का समय होता है, खासकर उन बच्चों के लिए जो अजीब अजीब सवाल पूछते हैं, जिनका मेरे पास जवाब नहीं था। अंत में हम हवाई जहाज में बैठ गए, जो तीन-चौथाई खाली था। बच्चों ने वास्तव में उड़ान के दौरान विमान के अंदर "छुपम-छुपाई" खेला। हमने अच्छी तरह से भोजन का आनंद उठाया था - भई मैंने अपनी गाढ़ी कमाई से इसके लिए भुगतान जो किया था।

जैसा कि सभी अच्छी चीजों को पहले या बाद में

अंत आना होता है, हमारी उड़ान भी उतरी और हमें उससे बाहर आना पड़ा। जब हम सामान आने का इंतजार कर रहे थे, तो बच्चों ने विमान का पता लगाने की कोशिश की थी जो हमें लाया और उसे अलविदा कहा। उनके पास अपने दोस्तों के साथ संबंध रखने के लिए उनके अपने अनुभव का अपना संस्करण होगा। बेशक, यह हम सभी के लिए आने वाले कई वर्षों के लिए याद रखने वाला अनुभव था। खासकर जब हमें यकीन नहीं था कि कब फिर हम सभी को हवाई यात्रा का मौका मिलेगा!

"मैंने यह कहने में गलती की थी कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। जबकि स्थिति विपरीत है।" -गैलीलियो, जो तत्कालीन पोप से डर गए थे जिन्होंने उन्हें गंभीर दुष्परिणामों के साथ धमकी दी थी (17वीं शताब्दी)

प्रो. देवेंद्र लाल, एफ.आर.एस

जब मैं भर्ती हुआ था तब प्रोफेसर देवेंद्र लाल पीआरएल के निदेशक थे। उनकी पत्नी श्रीमती अरुणा लाल पीआरएल में बहुत से लोगों के लिए माता की तरह थी। वे ज्यादातर स्टाफ सदस्यों को नाम से जानती थी। वे हमारे परिवार के सदस्यों के हालचाल भी पूछती रहती थी! वे छोटी-छोटी बातों के साथ प्रो. लाल की विदेश यात्राओं का ध्यान रखती थी। वे हमारे सेक्शन में आती, हमारे साथ बैठती और सभी विवरण प्रदान करती जिनकी हमें आवश्यकता होती थी और चीजों को अपनी संतुष्टि पूरा होने तक हमें काम में लगाए रखती थी। वीज़ा फॉर्म बहुत लंबा होता था। एक बार श्रीमती लाल अहमदाबाद में नहीं थी और प्रो. लाल को कनाडा जाना था।

जब हमने उनसे कनाडा के वीज़ा फॉर्म में विवरण भरने को कहा, तो वे परिवार के सदस्यों के विवरण जैसे सभी कॉलम भरते-भरते थक गए। अंत में, उन्होंने सिर्फ 'टॉमी' लिखा था। मैंने उसके बाद सुना है कि वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों ने उनसे पूछा था कि उन्होंने 'टॉमी' क्यों लिखा है, जबकि कोई ऐसा कॉलम नहीं था, उन्होंने कहा, 'बस इसलिए कि अगर आपको मेरे पालतू कुत्ते का नाम जानना हो तो'। वे हर समय बहुत व्यस्त रहते थे और ऐसे सांसारिक मुद्दों के लिए उनके पास समय नहीं था। उसने स्वयं एक बार कहा था कि वे बहुत भाग्यशाली हैं कि उनकी पत्नी वैसी ही है, जैसी वे चाहते थे। अपने पति के प्रति श्रीमती लाल की ऐसी निष्ठा थी।

संयुक्त राज्य अमेरिका में बसने के बाद करीब पिछले 15 वर्षों के दौरान प्रोफेसर लाल हर साल जनवरी महीने के दौरान पीआरएल नियमित रूप से आते थे। वे अनिवार्य रूप से पीआरएल में रिपब्लिक डे फ्लैग होस्टिंग समारोह में भाग लेते थे। एक साल, वे परेड मैदान में आ गए थे और कुछ युवा वैज्ञानिकों और छात्रों से घिरे हुए थे, जैसा आमतौर पर प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ होता है। मैं भी उन लोगों में शामिल था। उन्होंने प्रश्न किया, 'क्या यहां कोई है जो 26 जनवरी को पैदा

हुआ है?' किसी ने भी सकारात्मक जवाब नहीं दिया। उन्होंने कहा, 'आम तौर पर 15 लोगों में से एक व्यक्ति इस दिन पैदा होता है'। मैंने कहा, 'सर, जैसा कि यहां स्पष्ट है, 26 जनवरी को इन लोगों में से कोई भी पैदा नहीं हुआ था' और इसलिए यह '15 लोगों में से एक' के सिद्धांत को सही नहीं होना चाहिए। मैंने यह तब कहा था जब उनमें से किसी भी युवा वैज्ञानिक ने कुछ नहीं कहा। प्रोफेसर लाल ने टिप्पणी की, "रंगनाथन, आप एक बेहतर वैज्ञानिक हो सकते थे, यदि आपने विज्ञान पढ़ा होता तो"। यह मुझे रॉयल सोसाइटी के फेलो द्वारा दी गई बधाई थी! हम अब गणतंत्र दिवस परेड समारोहों पर प्रोफेसर लाल को नहीं देख पाएंगे। वे कैलिफोर्निया के लॉस एंजेलस में अकेले रह रहे थे, किसी को भी नहीं पता कि उनका अपने अपार्टमेंट में कब निधन हो गया और उनकी देह का पता कुछ दिनों के बाद ही चल पाया। नोबेल पुरस्कार के दावेदार एक महान वैज्ञानिक का इस तरह से विदेश में दुखद अंत हुआ!

1993 में, प्रोफेसर ए.के. सिंघवी ने 'मरुस्थलों के विकासक्रम' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समन्वय किया, जिसके लिए कई विदेशी, विशेष रूप से यूरोप से लोग आये थे। एक काफी अनुभवी जन संपर्क व्यक्ति के रूप में, मैंने उनमें से कई लोगों के साथ बातचीत की। हमने इन विदेशी लोगों के एक

वैज्ञानिक दौरे के लिए विशेष रूप से भारतीय रेलवे से टू टियर एसी डिब्बे की व्यवस्था की। सम्मेलन के बाद, प्रो. सिंघवी ने मुझे विदेशियों के साथ जाने वाली एक वातानुकूलित मिनी बस में अहमदाबाद - जोधपुर - जयपुर - जैसलमेर - भरतपुर - आगरा - दिल्ली यात्रा करने का काम सौंपा। लगभग एक हफ़्ते के लिए एक दर्जन यूरोपियों के साथ यात्रा करने का यह जानकारी से भरा अनुभव था।

मुझे फ्रांस के एक मंत्री स्तर के वैज्ञानिक (प्रोफेसर निकोल पेटिट मेयर) की विशेष देखभाल करनी थी क्योंकि उनकी शारीरिक स्थिति कुछ ऐसी थी जिसका उचित ध्यान रखने की आवश्यकता थी। जब तक हम आगरा पहुंचे, तब तक उनकी शारीरिक स्थिति और खराब हो गई और मैंने अपनी क्षमता और अनुभव के अनुसार दिल्ली और फ्रांस में एयरलाइनों से बात करके तत्काल फ्रांस जाने के लिए सब कुछ बंदोबस्त किया। वे मेरी चीजों को करने और काम करने की क्षमता से काफी प्रभावित हुई। यह तब और स्पष्ट हो गया जब उन्होंने जल्द ही मुझे फ्रांस आने के लिए और सभी खर्चों के साथ फ्रांसीसी भाषा के अध्ययन और जनसंपर्क में एक साल के कोर्स के लिए एक छात्रवृत्ति भेज दी। इसमें केवल पीआरएल के निदेशक की सिफारिश और वेतन के बिना एक वर्ष की छुट्टी

की मंजूरी चाहिए थी। अफसोस, तत्कालीन निदेशक ने एक तुच्छ बहाने के कारण सिफारिश करने से इंकार कर दिया और मैं इस कोर्स में भाग नहीं ले सका। पीआरएल के अस्तित्व के 40 वर्षों की अवधि के दौरान, पहली बार किसी प्रशासनिक कर्मचारी को अध्ययन के लिए विदेश जाने के लिए पूरी तरह से भुगतान छात्रवृत्ति मिली थी!

फिर भी, कुछ सालों से विदेशी यात्रा पोर्टफोलियो को संभालने के बाद, मेरे मन में विदेश यात्रा की इच्छा विकसित हो गई थी। उपरोक्त घटना ने विदेश यात्रा करने की मेरी इच्छा को प्रज्वलित किया और अधिक उत्तेजित किया। फिर 1997 में मेरी इच्छा को पूरा करने का मौका मिला। प्रो. कृष्णमूर्ति की मदद और प्रोत्साहन के साथ, मैंने पश्चिमी दुनिया का दौरा किया। मैंने इस उद्यम में काफी राशि खर्च की। अंत में मेरी इच्छा साकार हुई। मैंने लंदन होते हुए अमेरिका का दौरा किया और लौटते हुए यूरोपीय देशों का दौरा किया।

जिस दिन मैं लंदन में हीथ्रो हवाई अड्डे पर आया था, वह दिलों की रानी, लेडी डायना को दफनाने का दिन था। कुछ दिन पहले, दुर्घटना में उनकी मौत हो गई थी। हमें हवाई अड्डे पर दो मिनट का मौन रखने के लिए कहा गया था। अपनी

जगह पहुंचने के तुरंत बाद, मैं क्वीन विक्टोरिया और उनके परिवार के सामान्य निवास, बकिंघम पैलेस गया था। महल के कंपाउंड, दीवारों, हर जगह में गुलदस्ते और पुष्पांजलि के ढेर रखे हुए थे। अंतिम संस्कार की गतिविधियों का लगातार ताजा हाल बताया जा रहा था। लेकिन वे 'विशाल' भीड़ और इस तरह के अन्य विशेषणों का इस्तेमाल कर रहे थे और यह देखकर मैं मुस्कुरा दिया और आश्चर्य किया कि त्योहार के दिनों में लाल दरवाजा की भीड़ का वर्णन वे कैसे करेंगे!

लंदन में मेरे साथ हुई एक घटना यहाँ उल्लेख करने लायक है। मैं लंदन की सड़कों पर सिर्फ अनुभव के लिए और चीजों को देखने का आनंद उठाने के लिए घूम रहा था। एक शाम मैं बहुत थक गया था और एक जगह पर बैठकर आसपास के लोगों को देखने का फैसला किया। मुझे याद है कि यह जगह 'पिकाडिली सर्कस' था। वहाँ एक ईसाई नन आई और एक प्रकार की धार्मिक बातचीत में मुझे शामिल करने की कोशिश की। उसने यीशु मसीह के गुणों का वर्णन किया और मुझे ईसाई धर्म में शामिल होने के लिए कहा। मैंने बदले में हिंदुत्व और इसके व्यापक सिद्धांतों को बताने लगा। मैंने इसे एक अच्छा समय बिताने के रूप में लिया। लेकिन वे अपने

दृष्टिकोण में बहुत ही गंभीर और ईमानदार थी। जब मैं उसके उद्देश्य को पूरा करने वाला नहीं लगा, तो उसने मुझे 'पापी' कहा और मुझे शाप दिया कि न्याय के दिन यीशु मुझे दंडित करेगा। मुझे उनकी अपरिपक्वता और ज्ञान की कमी पर दया आ रही थी।

चित्र 5: लेखक जर्मनी में श्रीमती और प्रोफेसर पी. जनार्दन के साथ

जर्मनी में, मेरे मेजबान प्रोफेसर पी. जनार्दन (हम प्यार से उन्हें 'जैरी' बुलाते हैं) थे, जो बॉन में हंबोल्ट फैलोशिप पर थे। जैरी और उनकी पत्नी शोभा मुझे देखकर बहुत प्रसन्न हुए

और शोभा ने मुझे जर्मनी के आसपास की चीजें दिखाई।

अमेरिका में (मिशिगन, शिकागो), शुरू में मेरे एक दोस्त ने शिकागो में ओ'हेर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर मुझे मिले और कुछ दिनों तक मेरे मेजबान रहे। वे मुझे कृष्ण मंदिर में ले गए और सोचिए मैंने क्या देखा! मैंने प्रोफेसर शास्त्री से मुलाकात की, जो अहमदाबाद में मेरे कॉलेज के प्रिंसिपल थे, इस मंदिर में मुख्य पुजारी के रूप में यहां एक अलग कर्तव्य निभा रहे थे! हैरानी की बात है कि उन्हें मेरा नाम याद था और हमारी मुलाकात और पुरस्कार समारोह का दिन उन्हें याद था!

प्रोफेसर कृष्णमूर्ति मुझे मिशिगन के कलामाज़ू में ले जाने के लिए शिकागो आए; श्रीमती सुजाता कृष्णमूर्ति ने मेरे लिए एक सुखद स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया था, अपने घर में शानदार कर्नाटिक म्यूजिक सत्र के साथ, मृदंगम (एक दक्षिण भारतीय तालवाद्य उपकरण) पर अपने बेटे रोहन के साथ। रोहन मृदंगम में निपुण है, उसे कुछ पुरस्कार और पदक भी मिले हैं, जिसमें भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिया गया पुरस्कार भी शामिल है।

वह अब मृदंगम से जुड़े संगीत में डॉक्टरेट है। मेरा मानना है कि यह मेरे लिए प्रोफेसर कृष्णमूर्ति, सुजाता और प्रोफेसर जनार्दन और शोभा के लिए धन्यवाद देने का समय है। आप सभी को धन्यवाद! मैं आने वाले लंबे समय तक इस यात्रा मधुर की यादों को संजो कर रखूंगा।

“मैक्स प्लैंक के फिजिक्स ट्यूटर ने उन्हें भौतिकी में नहीं जाने की सलाह दी और कहा कि ‘इस क्षेत्र में लगभग सभी चीजें खोजी जा चुकी हैं’। मैक्स प्लैंक आगे बढ़ते गए और वे क्वांटम थ्योरी के प्रारंभिक संस्थापक बन गए।”

पीआरएल में विज्ञान

हालांकि मैं इस मामले पर टिप्पणी करने लायक नहीं हूं, लेकिन मैं निश्चित रूप से एक गैर-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कुछ बिंदुओं को दर्ज करना चाहता हूं। पीआरएल द्वारा युवा वैज्ञानिकों को कुछ दशकों से श्री हरि ओम प्रेरित डॉ. विक्रम साराभाई पुरस्कार से सम्मानित किया जाता रहा है। मैंने पुरस्कार विजेताओं द्वारा दिए गए व्याख्यानों को सुना है। आश्चर्यजनक बात यह है कि इसमें प्रोफेसर साराभाई का कोई उल्लेख नहीं किया जाता, जबकि यह पुरस्कार उनकी स्मृति के सम्मान में शुरू किया गया है! हालांकि, प्रोफेसर पी. जनार्दन एक अपवाद थे। पुरस्कार विजेता के रूप में अपने व्याख्यान से पहले, उन्होंने प्रोफेसर साराभाई को याद किया और कहा कि

वे पुरस्कार प्राप्त करके सम्मानित और गर्व दोनों महसूस कर रहे हैं। और क्यों न हो - प्रोफेसर साराभाई का दृष्टिकोण अब लगभग 45 हजार परिवारों के लिए आजीविका का स्रोत है और अंतरिक्ष कार्यक्रम देश भर में एक अरब लोगों तक पहुंच रहा है।

बहुत सारे पीआरएल वैज्ञानिक और कुछ इंजीनियर को भारतीय और अंतरराष्ट्रीय मंच में काफी कुछ प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। हालांकि हम सभी इन उपलब्धियों पर गर्व कर सकते हैं, लेकिन यह अच्छा होगा यदि पीआरएल वेबसाइट में पीआरएल के पुरस्कार विजेताओं की एक सूची हो।

न केवल वैज्ञानिकों के बारे में, बल्कि सुशिक्षित लोगों के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि यदि आप चीजों को नहीं जानते हैं तो वे आपका उपहास नहीं करते हैं; वे आपको शिक्षित करने की कोशिश करते हैं। जब भी मुझे वैज्ञानिकों से बात करने का समय और मौका मिलता है, तो मैं उनसे कई विषयों पर बात करता हूं और आनंद उठाता हूं। एक बार जब मैं एक वैज्ञानिक से बात कर रहा था, जो तब पीआरएल में एक रिसर्च स्कॉलर थे और अब विदेश में हैं। यह बात सूर्य और ग्रहों के बारे में थी। हालांकि मुझे अपने सौर मंडल के सभी ग्रहों के नाम मालूम हैं, लेकिन मुझे सूर्य से उनके

अस्तित्व का क्रम नहीं पता था। उन्होंने कहा कि ग्रहों को याद रखने का एक दिलचस्प तरीका है; “My Very Earnest Mother Just Served Us Nine Pizzas” जैसे वाक्य की तरह। प्रत्येक शब्द का पहला अक्षर हर ग्रह का पहला अक्षर बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस, नेपच्यून और प्लूटो का उल्लेख करता है। एक बहुत स्पष्ट व्याख्या थी और चीजों को याद करने का एक आसान तरीका था। हालांकि, प्लूटो ग्रह को आकार के कारण ग्रहों की सूची में से हटा दिए जाने के बाद अब मैं एक छोटा सा बदलाव कर चुका हूं (एक नया शब्द ‘PLUTOED’ तब से अस्तित्व में आया है)। मैंने नया वाक्य “My Very Earnest Mother Just Served Us Noodles” बनाया है!

1980 के दशक तक, पीएचडी करने के लिए पंजीकृत सभी शोध छात्रों को एक विदेशी भाषा पाठ्यक्रम करना पड़ता था और इस आशय का प्रमाण पत्र प्राप्त करना होता था। पीआरएल द्वारा सेंट जेवियर्स कॉलेज के एक प्रोफेसर को आमंत्रित करने की व्यवस्था की गई थी, जो पीआरएल में आकर फ्रेंच सिखाते थे ताकि पीएचडी के लिए पंजीकृत लोगों की आवश्यकता पूरी कर सकें। मेरे अनुरोध पर, मुझे इन कक्षाओं में भाग लेने की इजाजत दी गई थी। शोध छात्रों के साथ मुझे भी एक और

भाषा सीखने का लाभ मिला था। आप जितनी भाषा जानते हैं उतने व्यक्ति होते हैं!

सामान्यतया, विज्ञान सभी के जीवन में भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, 2001-2004 की अवधि के दौरान, 'कौन बनेगा करोड़पति' स्टार प्लस चैनल द्वारा भारतीय टेलीविजन में एक बड़ा हिट था, जिसके एंकर बिग बी अमिताभ बच्चन थे। मैंने इस प्रतियोगिता के लिए अपना नाम रजिस्टर करने की कोशिश की जब भी मुझे मौका मिला और उनके रिटर्न कॉल के लिए इंतजार कर रहा था ताकि मैं प्रतियोगिता में भाग ले सकूं। चूंकि मुझे स्टार प्लस चैनल से रिटर्न कॉल नहीं आ रहा था, तो मैंने प्रोफेसर रमेश से इस बारे में बात की, जो जानते थे कि मैं कोशिश कर रहा हूं। उन्होंने मुझे बताया, 'रंगा, संभावना का एक सिद्धांत है जिसे आप नहीं जानते हैं। मैं चाहता हूं कि आप अपना नाम 24 घंटे की अवधि के दौरान प्रत्येक घंटे की स्लॉट में 5-6 बार दर्ज करने की कोशिश करें; मुझे यकीन है कि आपको चैनल से रिटर्न कॉल जरूर मिलेगा' मैंने ठीक उसी तरह किया था (हालांकि मुझे उस महीने कुछ हजार रुपये का बिल बीएसएनएल को देना पड़ा)। मुझे चैनल से रिटर्न कॉल आई और 'हॉट सीट' तक पहुंच गया। तभी श्री बच्चन गंभीर रूप से बीमार हो गए और कार्यक्रम स्थगित हो

गया। मुझे तब एहसास हुआ कि जो वैज्ञानिक सिद्धांत मैंने सीखा है, उससे मेरे प्रयासों के लिए फल लगभग मिल गए थे। यह एक अलग कहानी है कि प्रोफेसर रमेश, जो हमारे पीएच.डी. छात्रों को पीआरएल में पढ़ाते हैं, ने मुझे मेरे मामले में यह कैसे हुआ, यह बताते हुए संभाव्यता के सिद्धांत पर एक स्फूर्त व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया था।

उपरोक्त घटना में थोड़ा अलग तरीके से सोचने के महत्व को रेखांकित किया गया; पीआरएल में प्रथम वर्ष पीएच.डी. छात्रों को कोर्सवर्क के बाद कार्य दिया जाता है। इन कार्यों को चुनने के लिए कई पुस्तकें हैं, जिन्हें आम तौर पर पाठ्यक्रम पढ़ा रहे वैज्ञानिक विद्यार्थियों को चुनकर देते हैं। इंटरनेट की उपलब्धता के साथ, इन सभी कार्यों के उत्तर आजकल आसानी से उपलब्ध हैं। इसलिए वैज्ञानिकों के लिए मूल रूप से समस्याओं के बारे में सोचना आवश्यक हो गया था और फिर उन विद्यार्थियों क सामने रखना होगा जो विद्यार्थियों को अन्य स्रोतों से जवाब खोजने की बजाय समस्याओं पर गंभीरता से सोचने और काम करने के लिए प्रेरित करेगा।

आमतौर पर अंतरिक्ष विभाग और विशेष रूप से पीआरएल के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने चंद्रयान और अब मंगलयान

(मंगल, जो हमारे पृथ्वी ग्रह से औसत दूरी 23 करोड़ किलोमीटर है) के कारण गौरव हासिल किया है।

हाल ही में, जब हमारे प्रधान मंत्री ने थुंबा में सफल मार्स ऑर्बिटर मिशन के अवसर पर हमारे वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के उत्साह वर्धन के लिए गए थे, तो यह कहा था कि यह एक अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट जीतने वाली भारतीय क्रिकेट टीम से हज़ार गुना बेहतर है। वास्तव में हमारे प्रधान मंत्री ने पीआरएल के निदेशक प्रोफेसर गोस्वामी को विशेष रूप से इस अवसर पर याद किया। यहां तक कि नासा ने विशेष रूप से हमारे प्रयासों की सराहना की थी क्योंकि भारत पहला देश है, जो पहले प्रयासों पर मंगल ग्रह पर अंतरिक्ष यान भेजने में सफल हुआ है!

"कांग्रेस ऐसी मजबूत पार्टी है - कोई भी इसे भारत में सत्ता से नहीं हटा सकता" - प्रधान मंत्री, स्वर्गीय नरसिम्हा राव

प्रशासन में घटनाएं

हम जब किसी संस्था में लगभग 40 वर्षों जितना लंबा समय व्यतीत करते हैं, तो स्वाभाविक रूप से ऐसी घटनाएं होती हैं जो हमें याद रह जाती हैं। 70 के दशक में, गलियारों में वॉटर कूलर नहीं होते थे। हर कमरे में एक घड़ा होता था जो हर रोज ताजे पानी से भरा जाता था। प्रयोगशाला में इतने सारे स्टाफ सदस्यों की चहल-पहल रहती थी। परिचारकों की ड्यूटी 8 बजे शुरू होती थी और वे गलियारों और कमरों को साफ करने और धूल झाड़ने की अपनी दिनचर्या पूरी करते थे। प्रत्येक कमरे में कर्मचारियों के प्रयोगशाला में बात करने के लिए एक इंटर्नल टेलीफोन इंस्ट्रुमेंट रहता था। और पीआरएल के बाहर के बात करने के लिए एक एक्सटर्नल टेलीफोन इंस्ट्रुमेंट था, जो केवल क्षेत्र अध्यक्ष और अनुभाग प्रमुखों को प्रदान किया जाता था। स्टाफ के लिए प्रत्येक गलियारे में

एक्सटर्नल टेलीफोन इंस्ट्रुमेंट रखा गया था। परिवहन अनुरोध फ़ॉर्म और यात्रा अनुरोध फ़ॉर्म में इंटर्नल टेलीफोन नंबर और एक्सटर्नल टेलीफोन नंबर भरना होता था। एक बार पीआरएल के अन्यमनस्क (खोये-खोये) प्रोफेसर हमारे कार्यालय आए और फॉर्म भरना शुरू कर दिया। जब उन्होंने Int. Tel. and Ext. Tel. कॉलम देखा, तो वे सचमुच आश्चर्यचकित हो गए और बोले “ओहो हो, क्या आपके पास ‘international और extraordinary’ टेलीफोन भी हैं?”

जब मैं पीआरएल में बिल्कुल नया था, एक बार मुझे प्रोफेसर बूटी को एक लिफाफा भेजना था, जो एक बहुत वरिष्ठ वैज्ञानिक थी और पीआरएल की डीन रह चुकी थी। चूंकि मुझे अपने बॉस से मौखिक जानकारी मिली थी, मैंने बूटी के स्थान पर ड्यूटी नाम सुना है और इस तरह मैंने लिफाफा पर प्रोफेसर ड्यूटी लिखा। हालांकि, लिफाफा उन तक पहुंच गया, लेकिन वह बहुत खराब समय था जब वे हमारे कमरे में घुसी और गर्जना की कि किसने मेरे नाम को डूटी लिखने का दुस्साहस किया है। मैं पहली बार मद्रास से बाहर आया था और मैंने कभी राममूर्ति, कृष्णमूर्ति आदि के अलावा नाम नहीं सुना था। मुझे नहीं पता चला कि क्या हुआ था। मेरे वरिष्ठ सहयोगी से उचित मार्गदर्शन के बाद, मैंने अपनी

अनजाने में हुई गलती के लिए प्रोफेसर बिमला बूटी से माफ़ी मांगी, जिससे वे शांत हुई।

जब मैं जनसंपर्क विभाग में था, तो मैं कुछ विदेशी आगंतुकों से परिचित हो गया था, जो कुछ अंतराल पर नियमित रूप से पीआरएल में आया करते थे। उनमें से एक थे प्रोफेसर टॉम गेह्लेल्स जो हमेशा अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए मुझसे संपर्क करते थे। एक बार उन्होंने मेरी टेबल पर एक किताब देखी और मुझसे मेरी पढ़ने की आदतों के बारे में पूछा। फिर उन्होंने सुझाव दिया कि उनके द्वारा लिखित पीआरएल पुस्तकालय में एक किताब है और मुझे इसे पढ़ना चाहिए और मेरी टिप्पणियां देना चाहिए। यह किताब भारत और महात्मा गांधी और हमारे हिंदू दर्शन के बारे में थी। किताब पढ़ने के बाद, मैंने उनके लिए अपने पत्र में कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियां कीं। एक महीने के बाद मुझे उनके द्वारा मेरी टिप्पणी की सराहना करते हुए एक पत्र मिला। उन्होंने एक वाक्य भी लिखा था। “इस अवधि के दौरान, मुझे भारत के विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिकों और छात्रों से कई पत्र मिले। वे सभी मुझसे इस या उस बात में उदारता चाहते थे। लेकिन आप एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी मेरी किताब की आलोचना करने का साहस किया और किसी भी अनुग्रह की मांग नहीं की।”

मुझे समय-समय पर पीआरएल में परिवहन विभाग की देखभाल का जिम्मा सौंपा गया था। अपेक्षाकृत नए आगंतुकों की जानकारी के लिए उन दिनों पीआरएल व्यक्तिगत उपयोग के लिए कर्मचारियों को वाहन देता था और उनके लिए प्रति किलोमीटर एक रुपया लिया जाता था। हम उसी दर पर घरेलू सामान के परिवहन/स्थानांतरण के लिए ट्रेलर के साथ जीप देते थे।

उस समय लगभग 8 वाहन और ड्राइवर थे। ड्राइवरों की चौकड़ी आक्रामक व्यवहार के लिए मशहूर थी। उन्हें नियंत्रित करना और आवश्यकतानुसार काम करवाना वास्तव में कठिन काम था। वे अक्सर बहुत गाली-गलौच करते थे। मेरा तत्काल काम उन पर नियंत्रण करना था। और उनके बेहूदे शोर-शराबे को कम करना था, जिसमें मैं ज्यादातर सफल रहा।

उन्होंने ठीक से बर्ताव करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे अपने आक्रामक व्यवहार को कम कर दिया और यहां तक कि स्टाफ सदस्यों को 'कृपया' और 'धन्यवाद' कहना शुरू कर दिया। मुझे यकीन है कि यदि हम पीआरएल के अशिक्षित कर्मचारियों की तुलना किसी भी अन्य सरकारी कर्मचारियों के साथ करेंगे, तो

पीआरएल कर्मचारी सामान्य ज्ञान, भाषा और शिष्टाचार में अन्य तरीकों से उन सबसे आगे होंगे।

पीआरएल में, हम हर दिन 9 से 5 बजे तक सप्ताह में छह दिन काम करते थे। इसमें लंच के लिए एक घंटा और महिने के दूसरे शनिवार को छुट्टी रहती थी। स्वर्गीय राजीव गांधी के शासनकाल के दौरान, ईंधन और बिजली की खपत को बचाने के लिए सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों में पांच दिन की सप्ताह प्रणाली शुरू की गई थी। पीआरएल में स्टाफ सदस्यों को काम के घंटे तय करने के लिए कहा गया - यह 9 से 5.30 बजे या 9.30 से 6 बजे होना चाहिए। 45 मिनट लंच के समय के साथ अधिकांश कर्मचारियों ने 9 से 5.30 बजे के वर्तमान कार्य समय को चुना।

पीआरएल में, जहां तक अनपढ़ कर्मचारियों का संबंध है, एक बहुत परेशानी की अवधि 1985 से 1995 के बीच की थी। हालांकि, गुजरात अपनी स्थापना के बाद से 'सूखा' राज्य बना हुआ है, उनमें से कई लोग इस या उस रूप में शराब पीते थे। पीआरएल एक वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशाला है, जहां शुद्ध अल्कोहल (सख्त नियंत्रण और पर्यवेक्षण के तहत वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए रखा जाता है) पर अपने हाथ साफ

करना उन पियक्कड़ों के लिए बहुत कठिन नहीं था, जो ऐसा करने पर तुले थे! मैं व्यक्तिगत रूप से उनमें से कुछको जानता था, जो अब जीवित नहीं हैं; मेरा मानना है कि उनकी असामयिक मौत का कारण उनकी लापरवाही और अनियंत्रित पीने की आदत थी।

एक समय में यह प्रथा उस स्तर पर पहुंच गई थी, जिसमें उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति से पहले (यानी सेवा में) मरने पर विश्वास करना शुरू किया ताकि पीआरएल प्रबंधन उनके परिवार के सदस्य को करुणामूलक आधार पर नौकरी दे सके, जो कि वास्तव में उन दिनों ऐसा होता था। जैसा कि हम सभी देख सकते हैं, कई कर्मचारियों के परिवार के सदस्य ऐसे हैं, जिन्हें करुणामूलक आधार पर पीआरएल में नौकरी दी गई है।

पीआरएल में एक बहुत दिलचस्प घटना प्रोफेसर ए पी जे अब्दुल कलाम के बारे में हुई, जिन्होंने पीआरएल के वैज्ञानिकों से बातचीत की थी। भारत के राष्ट्रपति बनने से पहले, उन्हें पीआरएल में मनाये जाने वाले समारोहों में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। पीआरएल का सभागार पूरी तरह से भर गया था। अब्दुल कलाम साहब को सीट नहीं मिल

पाई थी; वे ऐसे महान लेकिन सरल आदमी थे, कि उन्होंने सीट खोजने की जहमत नहीं उठाई। वे गलियारे में ही बैठ गए। समारोह को दूर दर्शन और अन्य मीडिया द्वारा कवर किया गया था। और अगले दिन, समाचार पत्रों ने सुर्खियों में लिखा, "पीआरएल में स्पेस मैन के लिए कोई स्पेस नहीं"। यह थोड़ा शर्मनाक था, इसमें कोई संदेह नहीं था। मुझे लगा कि आस-पास बैठे लोग जहां सभागार में कलाम साहब ने अपनी 'सीट' ली थी, वे अपनी सीट दे सकते थे (और इस शर्मनाक स्थिति से बच सकते थे)।

मैं पीआरएल में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (CISF) इकाई की आवश्यकताओं की भी देखभाल कर रहा था। पीआरएल में काम करते समय CISF से व्यवहार करते समय दो अलग-अलग दुनिया हैं।

जबकि पीआरएल में काम का माहौल अनुकूल और अनौपचारिक है, वहीं CISF कार्य संरचना में बहुत क्रमबद्ध और पदानुक्रमित है। मुझे शुरू में थोड़ा अजीब लग रहा था, जब एक सीआईएसएफ जवान सेना के तरीके से सलाम के साथ मेरे कमरे में प्रवेश करते थे। लेकिन वे बहुत अनुशासित हैं उन्होंने मुझे सीआईएसएफ के जवानों द्वारा आयोजित अग्निशमन प्रशिक्षण

चित्र 6: लेखक आग बुझाने में अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए

दिया था। समय के साथ, मुझे पता चला कि मुझे रजिस्ट्रार के अनुमोदन से उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में उनकी मदद करने में आनंद आता था।

आम तौर पर मुझे सीआईएसएफ के डिप्टी कमांडेंट से उनकी सभी नियमित गतिविधियों के लिए आमंत्रण और कुछ डिनर के आमंत्रण भी मिलते थे।

हाल ही में हमारे थलतेज परिसर में आयोजित होने वाले ‘एक

चित्र 7: सीआईएसएफ कर्मियों द्वारा हथियारों और गोला-बारूद में अपना कौशल प्रदर्शित करते हुए

मिनट ड्रिल प्रदर्शन' के लिए मुझे आमंत्रित किया गया था। सीआईएसएफ के जवानों को विभिन्न प्रकार की बंदूकें और रिवाल्वर के साथ ड्रिल करना मुझे रोमांचित कर गया; वे व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से विभिन्न प्रकार की बंदूकों को अलग - अलग कर देते थे और उन्हें उल्लेखनीय ढंग से पुनः जोड़ देते थे।

एक अधिकारी इस बात पर ताजा हाल बता रहा था कि विभिन्न कष्टप्रद स्थितियों में अपने कर्तव्यों को पूरा करने के

लिए जवानों को प्रदर्शन करना होता है। उनके बलिदान से हम सुरक्षित महसूस करते हैं, इसके लिए हम उन्हें सलाम करते हैं।

पीआरएल में 6ठे वेतन आयोग की सिफारिशों का कार्यान्वयन समय था। हम प्रशासन के कुछ अधिकारियों को प्रशासन के कर्मचारियों, जैसे श्री प्रदीप शर्मा और श्री सेंथिल बाबू द्वारा की गई गणना को सत्यापित करना था। मैं यहां एक छोटी सी घटना का वर्णन करना चाहता हूं। राशि की गणना करते समय, एक अधिकारी 122226/- के आंकड़े पर पहुंच गया, लेकिन गलती से 1222226/- लिखा था जिसमें मैंने बताया कि उसने एक अतिरिक्त 2 रखा है। मैं आश्चर्यचकित रह गया और उसकी सादगी का आनंद भी आया जब उसने मुझसे पूछा, 'मुझे कौनसा 2 निकालना चाहिए?'

प्रदीप शर्मा और सेंथिल बाबू की बात करते हुए, मैं कहना चाहता हूं कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। व्यक्तिगत रूप से निजी फाइलों का सत्यापन, इस अवधि के दौरान वेतन वृद्धि और पदोन्नति की गणना - किसी भी मानक से एक कठिन काम था। और जबकि वे पीआरएल के लिए बहुत ही नए थे। उन्होंने एससी/एसटी उम्मीदवारों की वेतन वृद्धि और/या पदोन्नति की गणना का काम कड़ी मेहनत से किया

और अपनी क्षमता साबित कर दी। दोनों अपने काम में बेहद अच्छे हैं। बहुत ईमानदार और सहयोग करने को तैयार हैं - ये गुण जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हैं। मैं उन्हें बधाई देता हूं और उनके भावी कार्यों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

वर्ष 2002 के आसपास, मुझे जनसंपर्क विभाग से लेखा अनुभाग में स्थानांतरित कर दिया गया। यह बिल पारित करने का नियमित और सांसारिक कार्य था और अन्य क्षेत्रों की तुलना में मेरे पीआरएल जीवन का दिलचस्प चरण नहीं था।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, पीआरएल की इन्फ्रारेड ऑब्ज़र्वेटरी माउंट आबू में स्थित है, जो एक पर्यटक स्थल भी है। चूंकि मैं गेस्ट हाउस के प्रशासन में शामिल था, इसलिए मैंने कई बार यात्रा की थी, कुछ समय के लिए गेस्ट हाउस और अन्य समय, जब भी कार्यवाहक/प्रशासनिक प्रभारी छुट्टी पर होते थे तब वेधशाला की गतिविधियों की देखभाल करने के लिए। मेरे पास विशाल दूरबीन के माध्यम से देखने का अवसर था जो कि उच्च ऊंचाई वाले गुरुशिखर पर स्थित है; वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों का धन्यवाद - मैं वास्तव में चंद्रमा में क्रेटर देख सकता था! वह वास्तव में आकर्षक

था। मैं उदयपुर सौर वेधशाला और पीआरएल के प्रशासनिक मामलों के संबंध में मध्यस्थ के रूप में काम कर रहा था। मैंने कई बार यूएसओ का दौरा किया था और यूएसओ के प्रधान, प्रोफेसर वेंकटकृष्णन के अनुरोध पर अंशदायी स्वास्थ्य सेवा योजना के उत्साहित व्याख्यान दिए थे, जिसका हम पीआरएल में लाभ उठाते हैं। इसकी काफी सराहना की गई।

वर्ष 2009 के दौरान, मुझे प्रशासनिक भवन के कक्ष 15-16 से पीआरएल मुख्य गेट के बाहर के कार्यालय में स्थानांतरित करने के लिए कहा गया ताकि मौजूदा कर्तव्यों के साथ, मैं प्रभावी तरीके से सुरक्षा, प्रेषण अनुभाग और पीआरएल के आगंतुकों का भी ध्यान रख सकूं। कई लोगों ने इस बात पर टिप्पणी की कि मुझे मुख्य पीआरएल परिसर से बाहर कर दिया गया था; लेकिन प्रोफेसर रमेश ने मुझे बताया, “रंगा, मैं पदनाम से आउटस्टैंडिंग वैज्ञानिक हूं (मैं यहां “वास्तविकता में भी” जोड़ता हूं) और आप एक ‘आउटस्टैंडिंग’ प्रशासक हैं। चीजों को देखने का तरीका भिन्न-भिन्न होता है! चीजों को खास तरीके से देखना भी संबंधित व्यक्ति की मानसिकता को दर्शाता है। निम्न साधारण वाक्य इसका प्रमाण है: ‘A woman, without her man, is nothing’ or this way: “A woman: without her, man is nothing”.

जैसा कि हम सभी देख रहे हैं, कई पीआरएल कर्मचारी इन 10 सालों में सेवानिवृत्त हुए हैं। अब जब मैं अपने दफ्तर में बैठता हूं, तो कई सेवानिवृत्त व्यक्ति मुझे इस या उस काम के लिए मिलते हैं और एक समान रूप से विलाप करते हैं कि पीआरएल अब उन दिनों की तरह नहीं है। जो बहुत ही स्वाभाविक है ऐसा क्यों होना चाहिए? हम सभी जानते हैं, परिवर्तन ही एकमात्र स्थिर है। मैं अक्सर उनसे बहस करता हूं कि 'क्या हमारे बच्चे नहीं बदले हैं? क्या वे हमारे जैसे हैं? फिर पीआरएल में बदलाव क्यों नहीं होना चाहिए? 'कुछ लोग अनिच्छा से सहमत भी हो जाते हैं।

खेल और पुरस्कार

मैं अपने स्कूल के दिनों में खिलाड़ी नहीं था। शायद यह उन दिनों सुविधाओं की कमी के कारण ऐसा था। लेकिन जब मैं पीआरएल में भर्ती हुआ, तो मुझे पीआरएल में मिले सभी अवसरों को प्राप्त करने में बहुत खुशी हुई। मद्रास में रहते हुए, मैं गलियों वाला कैरम खिलाड़ी था, बिना किसी उचित प्रशिक्षण या नियमों और विनियमों की जानकारी के। जब मुझे पीआरएल में कैरम खेलने का मौका मिला, तो मैंने इस खेल में अपना कौशल दिखाया और पहली बार कैरम टूर्नामेंट में भाग लिया।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि रिसर्च स्कॉलर्स लगभग सभी खेलों में पीआरएल में चैंपियन थे। लेकिन, उस वर्ष मैं सिंगल कैरम टूर्नामेंट के फाइनल तक पहुंच गया। क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे प्रतिद्वंद्वी फाइनल में कौन थे? यह और कोई नहीं हमारे वर्तमान निदेशक प्रो. जे.एन. गोस्वामी। हमने अपने छात्र हॉस्टल परिसर में फाइनल में भाग लिया। उनके सम्मान में मुझे कहना चाहिए कि प्रो.

गोस्वामी एक स्वाभाविक खिलाड़ी थे। मैंने बहुत कोशिश की, लेकिन मैं उनके खिलाफ नहीं जीत सका।

धीरे-धीरे, मुझे शतरंज ने आकर्षित किया। शतरंज के वार्षिक टूर्नामेंट पीआरएल में जनरल कैंटीन में आयोजित किये जाते थे। पीआरएल कैंटीन वहां थी जहां अब पुस्तकालय है। मुझे याद है कि प्रो. एस.बी. खडकीकर और प्रो. वी.एन. निजापुरकर जैसे वैज्ञानिकों को हराना थोड़ा अजीब लगता था। लेकिन वे अपनी पराजय में अनुग्रहशील थे।

पीआरएल में शतरंज खेलने के दौरान, मैं अंतरिक्ष विभाग अंतर केन्द्र स्पोर्ट्स मीट में पीआरएल का प्रतिनिधित्व करने वाली शतरंज टीम का हिस्सा बन गया, जहां पीआरएल ने नियमित रूप से पुरस्कार जीते।

कार्यशाला के कुछ कर्मचारी शतरंज सीखना चाहते थे और उन्होंने सिखाने के लिए मुझसे संपर्क किया। मैंने उनमें से कुछ को शतरंज सिखाया था। उनकी लोकप्रिय मांग के कारण, मैं बोर्ड में रानी के बिना खेलता था ताकि वे गेम में काफी समान महसूस कर सकें! अभी भी उनमें से कुछ मेरे कार्यालय में आते हैं और उन दिनों को याद करते हैं।

तब धीरे-धीरे, मैंने टेबल टेनिस सीख लिया। एसडब्ल्यूए (तब वह स्टाफ वेल्फेयर एसोसियेशन था) हॉल में टेबल टेनिस खेलने के लिए बहुत सारे सदस्य थे। इसके लिए रखे रजिस्टर में सदस्य अपने नाम लिखते थे और हम सभी गेम खेलने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते थे। मैं नौसिखिया था और खिलाड़ी मेरे साथ नहीं खेलना चाहते थे। मैं उनके खिलाफ खेलने के लिए अनिच्छुक था।

इसलिए मैंने श्री एन.डी. भावसार, जो गुजरात विश्वविद्यालय के खिलाड़ी और तत्कालीन पीआरएल चैंपियन थे, मुझे खेल में प्रशिक्षण देने के लिए कहा। श्री भावसार ने मुझे बुनियादी रूप से खेल सिखाया और जल्द ही मैंने अच्छा खेलना शुरू कर दिया और अंत में मैं उन्हीं को हराकर चैंपियन बना।

एक वर्ष, मैंने शतरंज, कैरम, टेबल टेनिस और एथलेटिक्स सहित खेलों में एक दर्जन से ज्यादा पुरस्कार जीते। जब पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया था, श्री वेणु माधव, तत्कालीन सचिव एसडब्ल्यूए पुरस्कार दे रहे थे, मेरी पत्नी से पूछा कि वे मंच पर पहुंचें और शेष पुरस्कारों को मेरे हाथ में दे दें क्योंकि वे इतने सारे पुरस्कार देते-देते थक

गए हैं। अभी भी मुझे पुरस्कार देते हुए मेरी पत्नी का एक फोटोग्राफ मेरे पास है!

चित्र 8: लेखक की पत्नी अपने पति को पुरस्कार देते हुए

दरअसल, मैं पुरस्कार वितरण समारोह के लिए एक बैग ले जाता था, ताकि हम हमारे सभी पुरस्कार सुरक्षित रूप से और आराम से घर ला सकें।

श्री वेणु माधव की बात करते हैं, पीआरएल के सभी लोग सहमत होंगे कि पीआरएल को डॉस-इसरो इंटर सेंटर स्पोर्ट्स

मीट में शामिल करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इससे पहले, पीआरएल ने डॉस-इसरो खेल गतिविधियों में हिस्सा नहीं लिया था। उन्होंने अपनी ऊर्जा और समय लगाया और डॉस/इसरो के अधिकारियों से बातचीत की और सभी व्यवस्था पूरी की ताकि पीआरएल भी भाग ले सके। श्री वेणु माधव को इसके लिए धन्यवाद।

इसके बाद से स्टाफ सदस्यों को इन गतिविधियों में भाग लेने और उन्हें अलग-अलग डॉस/इसरो केंद्रों में जाने का मौका मिलता है, अन्यथा उनके पास ऐसा मौका नहीं होता, विशेष रूप से लिपिक और सहायक स्तर के कर्मचारियों के लिए।

इस समय के दौरान, पीआरएल वार्षिक खेल कार्यक्रमों के संचालन के लिए भी प्रयास किए गए थे। प्रारंभिक वर्षों के दौरान, हमने गुजरात विश्वविद्यालय के सिंडर ट्रैक का इस्तेमाल करते थे। हमारे थलतेज कार्यालय में मैदान की तैयारी के बाद, जैसा कि आप सभी जानते हैं, हम हर साल 26 जनवरी को अपने मैदान में आनंद लेते हैं। यह वह दिन है जब स्टाफ के सदस्यों के साथ, यहां तक कि उनके परिवार के सदस्य एक साथ मिलकर खेल गतिविधियों में वक्त बिताते हैं।

चित्र 9: पीआरएल की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए सदस्यगण

इससे पहले पीआरएल में, हम सभी कैरम, टीटी, शतरंज और क्रिकेट जैसे खेलों खेलने के अवसर थे। इसके बाद श्री वाई.एम. त्रिवेदी ने पीआरएल में ब्रिज (कार्ड गेम) शुरू करने में दिलचस्पी ली, इस खेल ने यहां जड़ें जमा लीं।

उन्होंने इस गेम को पीआरएल में खेले जाने और बाद में डॉस-इसरो इंटर सेंटर स्पोर्ट्स मीट में खेलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जहां उनकी टीम के साथियों के साथ उनकी भागीदारी से पीआरएल ने शानदार प्रदर्शन किया और पुरस्कार जीते।

1985 के आसपास के कुछ वर्षों के दौरान, पीआरएल में बहुत अच्छे टेबल टेनिस खिलाड़ी थे। उनमें से कुछ रिसर्च स्कॉलर थे चूंकि रिसर्च स्कॉलर को डॉस/इसरो इंटर सेंटर स्पोर्ट्स में भाग लेने की इजाजत नहीं थी क्योंकि उन्हें कर्मचारी नहीं माना जाता था, अतः वे उनमें भाग नहीं ले सकते थे और नुकसान केवल पीआरएल का ही था।

मुझे यकीन है, अगर उन्हें अनुमति दी गई थी, तो पीआरएल को न केवल टेबल टेनिस में बल्कि अन्य खेलों में भी कुछ और पुरस्कार मिले होते। फिर भी, उन्होंने टीटी के लिए कर्मचारियों के सदस्यों के बीच दिलचस्पी रखने में मदद की।

वास्तव में, एक दिन हमने पीआरएल में दो शीर्ष राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के साथ एक प्रदर्शनी मैच का आयोजन किया। यह मैच वर्तमान में पुस्तकालय में आयोजित किया गया था, जो पहले जनरल कैंटीन थी। यह वास्तव में किसी भी मानकों के अनुसार एक शानदार प्रदर्शन था। प्रदर्शनकारियों ने टेबल के एक तरफ एक सिक्का रखा और किसी को सर्विस करने के लिए कहा; वे दूसरी तरफ रखे सिक्के पर गेंद को हर समय बिना विफल हुए मारा करते थे। वास्तव में आश्चर्यजनक

था! वे अपनी टांगों से भी खेल रहे थे।

मुझे यकीन है, कि अगर टीटी नहीं खेलने वाले खिलाड़ी भी होते तो वहीं की वहीं खेल में रुचि पैदा हो गई होती और खेल खेलना शुरू कर दिया होता। इस तरह का प्रदर्शन का उच्च स्तर उस दिन दिखाया गया था।

हासन में डॉस/इसरो इंटर सेंटर स्पोर्ट्स मीट 2014 में मेरी पिछली यात्रा में एक बहुत ही दिलचस्प बात यह थी कि लगभग सभी लोग एमसीएफ के निदेशक डॉ. डी. रविंद्रनाथ के बारे में बात करते थे, तो सभी अपने निदेशक को 'हमारे प्यारे निदेशक' बुलाते थे। यह केवल मैं ही नहीं था, पीआरएल के लगभग सभी लोग जिन्होंने यह सुना, इस विशेषण की विशिष्ट उपस्थिति का उल्लेख किया।

मैंने एमसीएफ के कुछ स्टाफ सदस्यों से पूछा, जिन्होंने मुझे बताया कि उनके निदेशक लगभग सभी को नाम से याद रखते हैं और उनकी कठिनाइयों के बारे में पूछताछ करते हैं, यदि कोई हो, उनके परिवार के सदस्यों की प्रगति आदि के बारे में पूछताछ करते हैं।

जब भी हम कामचलाऊ कैंटीन क्षेत्र में होते हैं, तो वे उस जगह के आसपास चले जाते थे और यह सुनिश्चित किया कि खेल के लोगों के साथ कतार में खड़े रहते हुए सभी उपलब्ध कराई सेवा से संतुष्ट थे। एक निदेशक, वह भी बहुत परवाह करने वाले सच्चे इंसान!

हिंदी समारोह

पहले पीआरएल में, न तो कोई हिंदी अनुभाग था, न ही हिंदी में किसी भी तरह की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कोई कर्मचारी था। फिर 1990 के दशक में, विभाग की आवश्यकताओं के अनुसार, हिंदी अधिकारी, श्री राधे श्याम गुप्ता को नियुक्त किया गया, जिन्होंने इस अनुभाग को शून्य से शुरू किया। अब, पीआरएल हिन्दी अनुभाग अहमदाबाद की संस्थाओं और सरकारी कार्यालयों में अच्छी तरह से जाना जाता है क्योंकि पीआरएल को हिंदी में काम करने के लिए कुछ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। श्री दिनेश मेहता और श्री गिरीश पडिया की तकनीकी सहायता विभिन्न अनुप्रयोगों के विकास में हिंदी अनुभाग को अपने कार्यक्रमों के सुचारु कामकाज में मदद मिली है।

हिंदी पखवाड़े का भी आयोजन हर साल की नियमित गतिविधि बन गयी है। इतने सारे मौखिक और लिखित प्रतियोगिताओं के अलावा, कर्मचारियों के बच्चों के लिए कविता प्रतियोगिता, स्टाफ के सदस्यों के लिए 'वर्ड क्विज़'

और 'अंताक्षरी' आयोजित की जाती हैं और सभी बहुत उत्साही रूप से भाग लेते हैं। काफी बच्चे कविता प्रतियोगिता में भाग लेते थे और उस दिन पीआरएल बहुत रंगीन हुआ करता था।

चित्र 10: लेखक की पत्नी हिंदी प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते हुए

अफसोस, अब बच्चों की भागीदारी का प्रचलन नहीं रहा! 'वर्ड क्विज़' और 'अंताक्षरी' प्रतिभागियों द्वारा बहुत जमकर भाग लिया जाता था; कुछ तकनीकी कर्मचारी और जो दिलचस्पी रखते थे वे 'प्रश्नोत्तरी' तैयार करने और 'अंताक्षरी' के लिए प्रासंगिक स्लाइड्स उत्साह से अपनी ऊर्जा और समय लगाते

थे। न केवल हम सबने नए शब्द सीखे, बल्कि यह खूबसूरत मनोरंजन भी था।

इस तरह के कार्यक्रमों के दौरान कर्मचारी अपनी स्वयं की बनाई कविताएं सुनाते थे। एक बार एक कर्मचारी ने एएमटीएस (अहमदाबाद म्युनिसिपल ट्रांस्पोर्ट सर्विस) के साथ पीआरएल के चार शीर्ष अधिकारियों की आलोचना की, जिसका हालांकि दर्शकों ने आनंद लिया था, लेकिन प्रबंधन ने बिल्कुल पसंद नहीं किया। इसके बाद, कविताएं तैयार करने के बाद, पढ़े जाने के लिए जांच की जाती हैं। इससे दूसरों को आनंद लेने की कीमत पर संबंधित व्यक्तियों को परेशानी से बचने में मदद मिलती है।

पीआरएल में सांस्कृतिक कार्यक्रम

1980 के दशक के दौरान, पीआरएल स्टाफ सदस्यों ने पीआरएल स्टाफ कल्याण एसोसिएशन के तत्वावधान में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते थे। इस व्यवस्था के तहत, बाहरी सांस्कृतिक समूहों द्वारा और हमारे स्टाफ सदस्यों द्वारा कई प्रस्तुतियां भी आयोजित की गईं थी। इस तरह की घटनाओं में हम सभी ने बहुत सारी प्रतिभाएं दिखायीं।

चित्र 11: पीआरएल परिवार के सदस्यगण सांस्कृतिक कार्यक्रम 'गरबा' में भाग लेते हुए

इन दिनों, हालांकि, इस तरह की सांस्कृतिक कार्यक्रम उस अर्थ में नहीं होते हैं, लेकिन पूर्णिमा के दिन पर नवरात्रि उत्सव के तुरंत बाद वार्षिक “गरबा” कार्यक्रम की व्यवस्था की जा रही है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, हम उस रात को ऐसे मज़े के साथ कितना आनंद लेते हैं। यहां तक कि विदेशियों जो संयुक्त राष्ट्र के पाठ्यक्रम में पीआरएल आते हैं, वास्तव में इस रात में हिस्सा लेते हैं।

परिवार

मुझे कहना चाहिए कि मेरे पास दो परिवार हैं! एक जिसमें मेरी मां, पत्नी, बच्चे, भाई-बहन और रिश्तेदार हैं; दूसरा पीआरएल है, जो मेरा विस्तारित परिवार है। यहां मैं पहले परिवार के बारे में लिखना चाहता हूं, क्योंकि उनके सहयोग के बिना मैंने जो कुछ भी पीआरएल में किया वह नहीं कर सकता था।

चित्र 12: अपने सुखी व खुश परिवार के सदस्यों के साथ लेखक

मेरी पत्नी का जन्म, लालन-पालन और अध्ययन बंगाल में हुआ। अहमदाबाद में मुझसे जुड़ने के बाद, वे पूरी तरह से हमारे जीवन के लिए समायोजित हो गई और मुझे और परिवार को समर्थन/सहयोग दिया जिससे मुझे घर के मामलों में किसी भी परेशानी के बिना अपने करियर पर ध्यान देने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया। उन्हें बंगाली का बहुत अच्छा ज्ञान है और आवश्यकता पड़ने पर छोटे-मोटे अनुवाद कर लेती हैं। उन्होंने हमारे बच्चों के अध्ययन का ख्याल रखा था और हमारे संतोष के अनुसार घर चलाया था। इसके माध्यम से, मैं उन्हें तहेदिल से धन्यवाद करता हूं।

हमारे बेटे ऋषिकुमार को एयरोप्लेन का जुनून सवार था, और उसने उड़ानों के साथ जुड़े कुछ अध्ययन करने का फैसला किया। शुरू में उनका विचार एक पायलट बनना था, लेकिन कोर्स की लागत लगभग 18 महीने के समय-सीमा में 25-30 लाख रुपये का भुगतान करने का था। चूंकि हम ऐसा नहीं कर सके, हमने दूसरे विकल्प का फैसला किया।

हालांकि बेटा निराश हुआ, लेकिन उसमें स्थिति को स्वीकार करने की परिपक्वता थी और आखिरकार विमान रखरखाव इंजीनियरिंग कोर्स किया। यह कोर्स काफी कठिन है क्योंकि

चित्र 13: पुत्र ऋषिकुमार उस विमान के पास खड़ा है जिसे वह संचालित करता है

छात्रों को पास होने के लिए न्यूनतम 70% स्कोर करना पड़ता है और ड्रॉप आउट दर काफी अधिक है। अब वह एक निजी एयरलाइन के साथ काफी उत्साह से काम कर रहा है।

बेटी प्रीति शायद होटल उद्योग के ग्लैमर से आकर्षित थी और होटल प्रबंधन पढ़ने का फैसला किया। हम, माता-पिता, “3 इडियट्स” फ़िल्म रिलीज़ होने के बहुत पहले, जो उस फिल्म में सिखाए गए सबक का पालन किया था, हमने हमारे बच्चों को जो भी चाहते थे, उन्हें अध्ययन करने की इजाजत दी।

चित्र 14: अमिताभ बच्चन को 'तिलक' लगाते हुए बेटी प्रीति

आखिरकार, उसने होटल प्रबंधन में स्नातक किया और आराम से पांच सितारा होटल में शामिल हो गई, जहां ग्लैमर भाग लिया गया वहा बिग बी अमिताभ बच्चन आए थे और हमारी बहुत ही उत्साहित प्रीति को अमिताभ बच्चन के माथे पर तिलक लगाने का मौका मिला!

गुजरात और गुजराती

यह कहा जाता है कि यदि आप गरीब पैदा होते हैं, तो यह आपकी गलती नहीं है। लेकिन अगर आप गरीब रहते हैं या गरीब मरते हैं, तो यह निश्चित रूप से आपकी गलती है। मैंने देखा है, सामान्य तौर पर, दक्षिण में लोग, या भारत के अन्य हिस्सों में भी वे 'अपनी आय की सीमाओं के भीतर खर्च' करने में विश्वास करते हैं। लेकिन गुजरात में, वे मानते हैं कि जितना आप खर्च करना चाहते हैं उतना कमाएं। मैंने अपने शुरुआती दिनों में इस गुणवत्ता को प्राप्त करने की कोशिश की और शुरुआती चरणों के दौरान जितना संभव हो उतना कमाया। मैं तब ही रुका जब मुझे विश्वास हो गया कि यह मेरे पूरे जीवन के लिए पर्याप्त है। इसे मैंने मेरे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ भी कुछ ऐसा ही किया।

मैं लगभग पांच फीट चार इंच था और 50 किग्रा से कम वजन था। जब मैं 20-22 साल का था मेरे शुभचिंतकों की सलाह पर, मैंने शारीरिक व्यायाम किया, प्रोटीन युक्त भोजन जैसे अंकुरित चने और योगासन सीखा जो आज तक जारी है।

चित्र 15: लेखक घर पर योगासन का अभ्यास करते हुए

और हां, जैसा कि आप सभी देख सकते हैं, अब मैं पांच फीट आठ इंच और 67 किलो वजन का हूँ। वित्तीय और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों में मेरी संतोषप्रद वृद्धि के बाद, अब मैं सभी मामलों में एक संतुष्ट आत्मा हूं मैं अपनी आर्थिक कौशल और विश्वास के लिए गुजरात की भावना को सलाम करता हूं। मैं उन सितारों का धन्यवाद करता हूं जिन्हों मुझे भारत में किसी अन्य राज्य के बजाय गुजरात में भेजा।

गुजरात की बात करते हुए, हाल में श्री नरेंद्र मोदी, गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री, और अब भारत के प्रधान मंत्री ने सभी सरकारी कर्मचारियों से अपने कर्तव्यों को करने के लिए और कार्यालय के समय का पालन करने की बात की थी। तदनुसार, शहरी विकास मंत्री श्री वेंकैया नायडू ने अपने मंत्रालय के कार्यालयों का अचानक निरीक्षण किया। यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'जो जल्दी उठता है वही कुछ पाता है।' लेकिन यहां, जल्दी आने पर भी कोई नहीं मिला। उन्हें लगभग 9 बजे भी अपनी सीट पर कोई नहीं मिला।

पुरानी आदतें जाते जाते ही जाती हैं! लेकिन यह बेहतर है कि वे जल्द ही 9 बजे तक नहीं बल्कि 0800 बजे तक कार्यालय में उपस्थित होने के आदी हो जाएं, अगर कार्यालय अवधि समाचार पत्रों में रिपोर्ट किए गए अनुसार 0800 से 1800 बजे तक परिवर्तित हो जाती है तो। इसके अलावा, प्रधान मंत्री के रूप में अपनी पहली विदेशी यात्रा पर, उन्होंने हिमालयी राज्य भूटान को प्राथमिकता दी, जो दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जो तथाकथित विकसित राष्ट्रों की सरकारों की तरह सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के बजाय सकल राष्ट्रीय खुशहाली (जीएनएच) पर विश्वास करता है। भूटान प्लास्टिक की थैलियों और धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाने वाला एकमात्र देश है। मुझे

आशा है, यह हमें जीएनएच में विश्वास करने में मदद करेगा और हमें इसके लिए काम करना शुरू कर देंगे।

चेन्नई का मेरा दोस्त अहमदाबाद में मेरे साथ कुछ दिन बिताने के लिए आया था। यह गुजरात में चुनाव का समय था। लेकिन अहमदाबाद में, कोई स्पष्ट पोस्टर नहीं थे, कोई भी राजनीतिक बैठकें नहीं थीं और/या शहर के चारों तरफ जीप नहीं जा रही थी, जिन पर लाउड स्पीकर लगे हों। वह उदासीनता देखकर आश्चर्यचकित था जो स्थानीय लोग राजनीति की ओर दिखा रहे थे। दक्षिण में, भारत के अन्य हिस्सों में भी, हर जगह पर राजनीतिक प्रकार की उत्साही गतिविधियों रेल-पेल हो रही होती है। मेरा दोस्त विश्वास नहीं कर पा रहा था कि आम चुनाव होने वाला था - राजनीतिक माहौल इतना सामान्य था। इससे पहले, नारे 'गरीबी हटाओ', 'इंदिरा भारत है' या 'इंडिया शाइनिंग' थे। लेकिन इस बार यह 'अब की बार मोदी सरकार' था। कभी नारों की जीत होती थी! गुजरात में देखा गया एक बहुत अच्छा पहलू उनका समावेशी विकास है; भारत में कुछ जगहों के विपरीत जहां 'भूमि पुत्र' भावना का अस्तित्व मौजूद था, जो अन्य राज्यों से आए और गुजरात में बस गए हैं, उन्हें किसी बाहरी समस्या के रूप

में कभी भी कोई समस्या नहीं हुई थी और मुझे यहाँ कभी भी बाहरी व्यक्ति की तरह महसूस नहीं हुआ। शायद गुजरात में विकास हुआ क्योंकि यह कई स्रोतों से योगदान हुआ है; क्योंकि यह कई संस्कृतियों और परंपराओं और लोगों द्वारा पोषित था; यह राज्य की सहिष्णुता और स्वीकृति के स्तर की बात करता है जो कि इसके विकास और समृद्धि की कुंजी रही है। राजनीतिक गतिविधियों में अपना समय बर्बाद करने की बजाए एक औसत गुजराती अपनी ब्रेड एंड बटर (यदि संभव हो तो जाम) - कमाई अर्जित करने के बारे में अधिक सोचता है। इसी तरह, वह कला और संस्कृति में शामिल होने में कम रुचि रखते हैं, जो समझ में आता है।

शायद गुजरात के इस इत्मीनान वाले रवैये के कारण है कि मैंने दक्षिण भारत से एक औसत व्यक्ति के विपरीत अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी अहमदाबाद में रहने का फैसला किया है!

आभार

मैं श्री के.पी. कण्णन और श्रीमती मैथिली कण्णन (मेरी चितप्पा और चित्ति) के साथ मेरे बड़े भाई श्री वी. नारायणन का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने अहमदाबाद में मेरे शुरुआती दिनों में मेरी सहायता की।

मैंने इस पुस्तक की विषय वस्तु का निर्णय लेने से पहले, मैंने पीआरएल लाइब्रेरी में काफी समय बिताया था; मैंने हमेशा महसूस किया है कि हमारा पुस्तकालय में जाना अपने आप में एक बहुत संतोषजनक अनुभव है। मैं अपने कार्यकाल के दौरान मुझे प्रदान किए गए सभी सहयोग के लिए पीआरएल लाइब्रेरी का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं।

मैंने इस किताब को लिखने के विचार पर विचार करने वाले अपने कुछ दोस्तों और सहयोगियों से बात की थी। उनमें से कुछ ने मुझे इस पुस्तक के साथ आगे बढ़ने की सलाह दी, जिससे मुझे इसे अंतिम रूप देने में मदद मिली। उनके प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद।

कुछ लोगों ने इन चीजों पर बात की, मुझे लिखा, अपने सुझाव दिए, मुझे अपने विचारों का संदर्भ देने दिया, सहायता प्रदान की और कई अन्य तरीकों से सहायता प्रदान की; उन सभी के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं। श्री दिनेश मेहता और डॉ. भूषित वैष्णव ने इस पुस्तक के अंतिम संस्करण को तैयार करने में बहुत मदद की। मैं उन्हें भी धन्यवाद देता हूं।

वी. रंगनाथन

vranganathan29@gmail.com

Germany